

POSTAL. REG. NO.M.P/BHOPAL/4-185/2025-27

प्रकाशन जारी होने की दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख

राजपूत समाज का मुख-पत्र मासिक

RNI.No. MPHIN/2009/29540

राजपूत दर्पण

पृष्ठ संख्या 36 पोस्टिंग की दिनांक माह की 15 तारीख

■ दिनांक: 15 अक्टूबर 2026 ■ वर्ष-18 ■ अंक : 03

■ वार्षिक शुल्क-400/- ■ एक प्रति-40/-



शुभ नवरात्र

जय क्षत्रिय धर्म



उपाध्यक्ष

भरत सिंह जादौन
प्रदीप कुमार सिंह चौहान
वी.पी.एस. भदौरिया
विपिन चौहान
रामवीर सिंह सिकरवार
देवेंद्र मोहन नेगी

संगठन सचिव

डी.आर. सिंह
बुद्ध सिंह कुशवाह
बृजेश चौहान
जयेश परिहार
हेमंत बहादुर सिंह परिहार
संतोष सिंह 'राजा' तोमर
शैलेंद्र सिंह कुशवाह

सह सचिव

संतोष ठाकुर
राजीव परिहार
अरविंद चौहान
योगेंद्र कुशवाह
योगेंद्र चौहान
प्रचार प्रसार सचिव

केशव सिंह गौर

रामेंद्र कुशवाह
आलोक भदौरिया

अतुल चौहान

कार्यकारिणी सदस्य

डी.एस. भदौरिया

शलम भदौरिया

रामभुवन सिंह कुशवाह

एन.के.एस. भदौरिया

हेमंत सिंह चौहान

संदीप चौहान

धीर सिंह भदौरिया

आर.बी.एस. भदौरिया

चंदन सिंह सूरमा

डॉ. बी.एम.एस. परमार

जय क्षत्रिय एकता



पंजीयन क्र. 1582/1969

जय भवानी



म. प्र. राजपूत समाज

अध्यक्ष

कार्यकारी अध्यक्ष

वरिष्ठ उपाध्यक्ष

महासचिव

अतिरिक्त महासचिव

कोषाध्यक्ष

लेफ्टि. विनय भदौरिया अभय प्रताप सिंह सोलंकी इंजी.जी.पी.एस. चौहान दीपक चौहान ऋतुराज सिंह परमार राजेश कुशवाह

सम्माननीय क्षत्रिय बंधुओं एवं क्षत्राणियों

दिनांक : 01/10/2026

—: आपको नवरात्रि पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं —

मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि आप सहपरिवार पूर्ण रूप से स्वस्थ व प्रसन्नचित होंगे।
नवरात्रि के नाम से ही हमारे मन मस्तिष्क में शक्ति, शौर्य और साहस का भाव जागृत हो जाता है।

बात जब शक्ति और साहस की होती है तो हमारा ध्यान अनायास ही आज की युवा पीढ़ी की तरफ चला जाता है और। आज का समय शिक्षा का है ना कि केवल शस्त्र का। इस आधुनिक युग में शिक्षा अत्यंत ही बलशाली शस्त्र है, जिसके पास यह है, वो समाज में सबसे आगे है। और कल्पना कीजिए कि यदि शिक्षा की ताकत के साथ मस्तिष्क और शरीर की ताकत जो कि हम क्षत्रियों का स्वाभाविक गुण है दोनों मिल जाए तो हम फिर से अपनी विजय पताका फहरा सकते हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए मध्य प्रदेश राजपूत समाज संस्था ने कुछ साल पहले कक्षा 10वीं के छात्र-छात्राओं के लिए स्मृति छात्रवृत्ति योजना शुरू की थी जिसके बड़े सकारात्मक परिणाम आए। इस वर्ष भी संस्था ने स्मृति छात्रवृत्ति योजना द्वितीय शुरू की है जिसके अंतर्गत ऐसे राजपूत/क्षत्रिय परिवार जो आर्थिक रूप से कम सक्षम हैं उनके ऐसे होनहार छात्र-छात्राओं को जिन्होंने शैक्षणिक वर्ष 2026 में कक्षा 10वीं में 85 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त किए हो तो वे अपने समस्त दस्तावेजों के साथ अपना आवेदन शनिवार, दिनांक 17 अक्टूबर 2026 तक संस्था के कार्यालय महाराणा प्रताप भवन में जमा कर सकते हैं। जिससे संस्था चयनित छात्र-छात्राओं को इस योजना का लाभ दे सके।

हम हर वर्ष विजयादशमी शस्त्र पूजन के शुभ अवसर पर समाज की विभिन्न प्रतिभाओं को जिन्होंने शिक्षा (कक्षा 10वीं तथा 12वीं में 95 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हों), धार्मिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, व्यावसायिक, आर्थिक, कला साहित्यिक, खेलकूद, पत्रकारिता गायन, वादन, शासकीय, अशासकीय, सेवा या अन्य किसी भी क्षेत्र में वर्ष 2026 में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की हो, उन्हें सम्मानित करते हैं। यदि आपकी जानकारी में ऐसी कोई राजपूत समाज की प्रतीमाएं हों तो ? उनकी जानकारी मय प्रमाण पत्र (छाया प्रति) के दशहरे से पूर्व शनिवार, दिनांक 17 अक्टूबर 2026 तक महाराणा प्रताप भवन में जमा करें अथवा समाज की ई-मेल आईडी पर भेजने का कष्ट करें। जिससे हम उन सभी सामाजिक प्रतिभाओं का दशहरे के शुभ अवसर पर सम्मान कर सकें।

मुझे आपको यह बताते हुए अत्यंत हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है कि महाराणा प्रताप भवन के द्वितीय तल पर 21 कमरों के अलावा तृतीय तल पर भी 20 कमरों का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है। इन उपलब्धियों के लिए हम महाराणा प्रताप सामाजिक एवं सांस्कृतिक ट्रस्ट के सभी सम्मानित वरिष्ठ सदस्यों का आभार व्यक्त करते हैं। जिनके अथक प्रयासों से यह सब कार्य संभव हो पा रहे हैं। और हमें विश्वास है की वर्ष 2027 में हम शीघ्र ही इस भवन का लोकार्पण मध्य समारोह में कर सकेंगे।

हर वर्ष दिसंबर माह में होने वाला राष्ट्रीय स्तर का विवाह योग्य युवक-युवतियों का 9वां परिचय सम्मेलन हम सब मिलकर इस वर्ष भी रविवार, 13 दिसंबर-2026 को महाराणा प्रताप भवन में आयोजित करने वाले हैं। इस वर्ष भी हम ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों तरीकों से बायोडाटा मंगवाएंगे। बायोडाटा भेजने की अंतिम तिथि 25 नवंबर 2026 है।

बंधुओं एवं क्षत्राणियों दशहरा शक्ति पूजन का पर्व है। विजयादशमी हम क्षत्रियों का परंपरागत गौरवशाली पर्व रहता है जिसको हम सब मिलकर हर्षोल्लास के साथ मनाएंगे, साथ ही इस अवसर पर आयोजित समाज की प्रतिभा सम्मेलन समारोह में हम आप सब अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे।

अतः मंगलवार, दिनांक 20 अक्टूबर 2026 को प्रातः 10:30 बजे, महाराणा प्रताप भवन, चार इमली, मेन रोड नंबर 3 भोपाल में आप अपने शस्त्र सहित, (यदि संभव हो सके तो ?) सम्मिलित होकर वार्षिक साधारण-सभा, शस्त्र पूजन तथा प्रतिभा सम्मान समारोह के साथ आयोजित पारिवारिक सह-भोज में सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।



आपको विजयदशमी पर्व एवं दीपावली की अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएं

जय भवानी, जय क्षत्रिय धर्म, जय क्षत्रिय एकता



आपका

(लेफ्टि. विनय भदौरिया)

कार्यालय : महाराणा प्रताप भवन, चार इमली, मेन रोड नं.- 3, भोपाल-462016 (म.प्र.)

मो: 917 908 1582 E-mail: mprajputsamaj1582@gmail.com

Facebook: M.P.RajputSamaj1582Bhopal, Web - www.mprajputsamaj.org

प्रेरणास्त्रोत

- ▶ स्व. श्री प्रहलाद सिंह राणा
- ▶ स्व. डॉ. एम.पी. सिंह
- ▶ स्व. श्री नटवर सिंह परमार
- ▶ स्व. श्री हनुमन्त सिंह विकल
- ▶ स्व. श्री नारायण सिंह सिसौदिया
- ▶ स्व. श्री महेंद्र गगन
- ▶ स्व. श्री महेन्द्र प्रताप सिंह तोमर
- ▶ स्व. श्रीमती रक्षा सिसौदिया
- ▶ स्व. श्री जगदीश सिंह ठाकुर
- ▶ स्व. डॉ. करण सिंह कुशवाह

संपर्क नंबर

- ▶ श्री डी.एस. मदीरिया - 09425365142
- ▶ श्री शलम मदीरिया - 09425011533
- ▶ श्री रामगुप्त सिंह कुशवाह - 09425006350
- ▶ श्री एन.के. एस मदीरिया - 09425189198
- ▶ लेफ्टि. विनय मदीरिया - 0755-4222000
- ▶ श्री रणजीत सिंह सेगर - 9893323158
- ▶ श्री जी.पी.एस. चौहान - 09425005418
- ▶ श्री राजेश कुशवाह - 09827447630
- ▶ श्री रामवीर सिंह सिकरवार - 9425303215
- ▶ कु. शालिनी सिकरवार - 917908 1582

इस पत्रिका के माध्यम से हम समाज में पारिवारिक आत्मीयता और रचनात्मक सक्रियता बनाये रखने का प्रयास कर रहे हैं। किसी के सम्मान को ठेस पहुंचाना या किसी की मानहानि हमारा लक्ष्य नहीं है, फिर भी जाने-अनजाने यदि ऐसा हो तो हम अग्रिम खेद व्यक्त करते हैं। इस पत्रिका के माध्यम से हम समाज में पारिवारिक आत्मीयता और रचनात्मक सक्रियता बनाये रखने का प्रयास कर रहे हैं। किसी के सम्मान को ठेस पहुंचाना या किसी की मानहानि हमारा लक्ष्य नहीं है, फिर भी जाने-अनजाने यदि ऐसा हो तो हम अग्रिम खेद व्यक्त करते हैं।

हम कोई विवाद नहीं चाहते यदि हुआ तो निपटारा मोपाल न्यायालय के अधीन होगा।

बहुत सी सामग्री हम अन्य पत्र-पत्रिकाओं से लेते हैं उनके प्रति हम कृतज्ञा हैं।

दर्पण संक्षेप

05

वाराणसी में UGC...



10

युवा पीढ़ी के पय-प्रदर्शक...



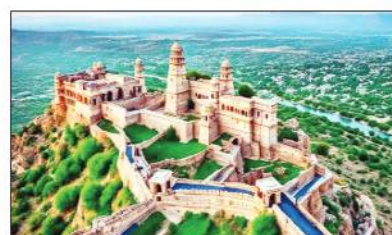
16

कहीं कैंसर न बन जाए ...



06

चित्तौड़गढ़ दुर्ग: सुंदरता...



13

नवरात्र उत्सव पूरे देश...



20

बच्चों को भी हो सकता...



संपादकीय कार्यालय व पत्र व्यवहार का पता

एम-2, 159 जौन-2, महाराणा प्रताप नगर, मोपाल- 462011 (म.प्र.) मोबाइल नंबर-917 908 1582

Email-rajputdarpan.bpl@gmail.com संपादन-प्रकाशन: अवैतनिक अव्यवसायिक, हमारे पाठक लेखक भी हो सकते हैं, उनके लेख उनके स्वयं के विचार हो सकते हैं, संपादक एवं प्रकाशक का उनके विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। संपादक

सेवा के 25 वर्ष: विकसित भारत के संकल्प की अविराम यात्रा

भारत के सार्वजनिक जीवन में कुछ यात्राएँ केवल राजनीतिक यात्रा नहीं होतीं, वे राष्ट्र-निर्माण की यात्रा बन जाती हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष ऐसी ही एक प्रेरणादायी यात्रा का प्रतीक हैं। 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में मोदी ने जिस जिम्मेदारी को स्वीकार किया था, वह आज 25 वर्षों की निरंतर जनसेवा, नेतृत्व और राष्ट्र के प्रति समर्पण की एक ऐतिहासिक यात्रा बन चुकी है। गुजरात से शुरू हुई यह यात्रा आज भारत को विकसित, आत्मनिर्भर और विश्व में अग्रणी राष्ट्र बनाने के संकल्प तक पहुँच चुकी है। इन 25 वर्षों को केवल सत्ता में निरंतरता के रूप में देखना इस यात्रा को सीमित कर देना होगा। वास्तव में यह नीति से नीयत, नीयत से परिणाम और परिणाम से जनविश्वास तक की यात्रा है।

गरीब के सम्मान से राष्ट्र के उत्थान तक: प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही है कि विकास को उन्होंने केवल बड़े शहरों और बड़े उद्योगों तक सीमित नहीं रखा। गरीब, किसान, महिला, युवा, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, जनजातीय समाज और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना उनकी नीतियों का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। जनधन योजना के माध्यम से वित्तीय समावेशन, उज्ज्वला योजना के माध्यम से महिलाओं के जीवन में सुविधा, स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से स्वच्छता को जन आंदोलन बनाना, प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से गरीब परिवारों को पक्का घर, आयुष्मान भारत के माध्यम से स्वास्थ्य सुरक्षा और पीएम-किसान के माध्यम से किसानों को प्रत्यक्ष सहायता—इन पहलों ने शासन और सामान्य नागरिक के बीच संबंध को नए रूप में स्थापित किया है। यह परिवर्तन केवल योजनाओं की सूची नहीं है। यह उस सोच का परिणाम है जिसमें सरकार का अर्थ केवल प्रशासन नहीं, बल्कि जनजीवन में सकारात्मक परिवर्तन है।

महिला शक्ति को नेतृत्व की शक्ति बनाना: प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने नारी शक्ति को केवल लाभार्थी के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की सक्रिय भागीदार के रूप में देखने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ से लेकर महिला स्वयं सहायता समूहों, उज्ज्वला, मुद्रा, जनधन और अन्य योजनाओं तक महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त करने का प्रयास हुआ है। आज देश की महिलाएँ राजनीति, प्रशासन, विज्ञान, सेना, खेल, उद्यमिता और शिक्षा सहित प्रत्येक क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम जैसे कदम राजनीतिक प्रतिनिधित्व के क्षेत्र में भी एक नई दिशा का संकेत देते हैं। एक महिला जनप्रतिनिधि के रूप में मैं मानती हूँ कि जब देश की आधी आबादी आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ती है, तब पूरा देश आगे बढ़ता है।

पिछड़े वर्गों के सशक्तीकरण की दिशा में: मेरे लिए प्रधानमंत्री मोदी जी की यात्रा का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक न्याय और अवसरों के विस्तार से भी जुड़ा है। पिछड़े वर्गों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व का विषय नहीं है; यह शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता, कौशल, वित्तीय अवसर और सम्मानजनक जीवन से जुड़ा व्यापक प्रश्न है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकार ने वंचित वर्गों के लिए योजनाओं की पहुँच बढ़ाने, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण को मजबूत करने और अवसरों को अधिक व्यापक बनाने पर जोर दिया है। यही सोच 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के भाव को मजबूत करती है। मध्य प्रदेश में पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण के दायित्व से जुड़े होने के कारण मैं विशेष रूप से महसूस

करती हूँ कि अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुँचाना ही सुशासन की वास्तविक कसौटी है।

डिजिटल भारत और बदलता हुआ शासन: पिछले 25 वर्षों की एक बड़ी उपलब्धि भारत के शासन तंत्र में तकनीक का व्यापक समावेश भी है। आज डिजिटल भुगतान, आधार, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, डिजिटल सार्वजनिक अवसरचना और ऑनलाइन सेवाओं ने नागरिक और सरकार के बीच की दूरी को कम किया है। भारत ने यह दिखाया है कि तकनीक केवल आधुनिकता का प्रतीक नहीं, बल्कि पारदर्शिता, गति और समावेशन का माध्यम भी बन सकती है। भारत की डिजिटल क्षमता ने विश्व के सामने एक नया मॉडल प्रस्तुत किया है और अनेक क्षेत्रों में भारत आज समाधान देनेवाले देशों में शामिल हो रहा है।

आत्मनिर्भर भारत से विकसित भारत तक: प्रधानमंत्री मोदी जी की सोच में भारत केवल एक बड़ा बाजार नहीं, बल्कि एक मजबूत उत्पादन, नवाचार और आत्मनिर्भरता वाला राष्ट्र है। 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत', स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया और बुनियादी ढाँचे में बड़े निवेश जैसी पहलों ने भारत की आर्थिक क्षमता को नई गति देने का प्रयास किया है। आज भारत की आकांक्षा केवल वर्तमान को बेहतर बनाने की नहीं, बल्कि 2047 तक विकसित भारत के निर्माण की है। यह लक्ष्य केवल सरकार का लक्ष्य नहीं हो सकता; यह 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी से ही पूरा होगा।

विश्व पटल पर नए आत्मविश्वास का भारत: प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में भी आत्मविश्वास और सक्रियता दिखाई देती है। भारत ने वैश्विक मंचों पर विकासशील देशों की आवाज को मजबूती से रखने का प्रयास किया है। G20 की अध्यक्षता, वैश्विक दक्षिण की चिंताओं को सामने रखना, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, आपदा के समय सहायता और भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका इस परिवर्तन को दर्शाती है। भारत आज विश्व व्यवस्था में केवल एक सहभागी नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली भागीदार के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत कर रहा है।

25 वर्ष हमें क्या सिखाते हैं?: नरेन्द्र मोदी जी की 25 वर्षों की यात्रा हमें यह सिखाती है कि नेतृत्व केवल पद प्राप्त करने का नाम नहीं है। नेतृत्व का वास्तविक अर्थ है—दृष्टि रखना, कठिन निर्णय लेने का साहस रखना और उन निर्णयों को परिणाम में बदलने के लिए निरंतर परिश्रम करना। गुजरात के मुख्यमंत्री से लेकर भारत के प्रधानमंत्री तक की यह यात्रा निरंतर जनसेवा की यात्रा रही है। आज जब हम इन 25 वर्षों को देखते हैं, तो यह केवल अतीत का मूल्यांकन करने का अवसर नहीं, बल्कि आने वाले भारत की दिशा तय करने का अवसर भी है।

विकसित भारत के संकल्प के साथ: आज इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं प्रधानमंत्री मोदी जी को 25 वर्षों की निरंतर जनसेवा के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। एक जनप्रतिनिधि और मध्यप्रदेश सरकार में मंत्री के रूप में मेरा विश्वास है कि 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' केवल एक विचार नहीं, बल्कि नए भारत की कार्य संस्कृति है।

हमारा संकल्प है कि समाज के प्रत्येक वर्ग—विशेषकर गरीब, पिछड़े, वंचित, महिलाएँ, युवा और अल्पसंख्यक को विकास की मुख्य धारा से जोड़ते हुए एक ऐसा भारत बनाया जाए जहाँ अवसर सबके लिए हों और सम्मान प्रत्येक नागरिक का अधिकार हो। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में पिछले 25 वर्षों ने भारत को नई आकांक्षा, नया आत्मविश्वास और नई दिशा दी है। अब अगला लक्ष्य और भी बड़ा है।

2047 का विकसित भारत: आइए, इस अमृत संकल्प की यात्रा में हम सभी अपनी भूमिका निभाएँ और एक ऐसे भारत के निर्माण का संकल्प लें जो समृद्ध भी हो, सशक्त भी हो, आत्मनिर्भर भी हो और अपनी महान सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने वाला विश्वगुरु भारत भी हो। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को जनसेवा के 25 गौरवपूर्ण वर्षों की हार्दिक बधाई।

श्रीमती कृष्णा गौर, (लेखिका मध्य प्रदेश शासन की पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार हैं।)

वाराणसी में UGC पर करणी सेना का प्रदर्शन: शास्त्री घाट से कलेक्ट्रेट तक निकाला जुलूस, पुलिस से हुई नोकझोंक



वाराणसी। वाराणसी में सोमवार को करणी सेना और विभिन्न सवर्ण संगठनों ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के नए इक्विटी नियमों के विरोध में प्रदर्शन किया। शास्त्री घाट पर जुटे कार्यकर्ता जुलूस निकालते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचे। यहां गेट पर रोके जाने के दौरान पुलिस से उनकी नोकझोंक हुई। इसके बाद पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लेना शुरू कर दिया।

प्रदर्शनकारियों ने केंद्र सरकार से UGC के नियम वापस लेने और देश-प्रदेश में सवर्ण आयोग गठित करने की मांग की। करणी सेना के पदाधिकारियों का आरोप है कि नए नियमों में सामान्य वर्ग के छात्रों के हितों की रक्षा के लिए पर्याप्त सुरक्षा प्रावधान नहीं हैं। प्रदर्शन के दौरान मौके पर बड़ी संख्या में सुरक्षाकर्मी तैनात रहे।

शास्त्री घाट से कलेक्ट्रेट तक निकाला जुलूस सोमवार को करणी सेना और विभिन्न सवर्ण संगठनों के कार्यकर्ता शास्त्री घाट पर जुटे। यहां से उन्होंने जुलूस निकाला और नारेबाजी करते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचे। प्रदर्शनकारियों ने UGC के नए नियमों को वापस लेने और सवर्ण आयोग के गठन की मांग उठाई। कलेक्ट्रेट गेट पर पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को आगे बढ़ने से रोका। इस दौरान करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष और पुलिसकर्मियों के बीच तीखी बहस हुई। इसके बाद कार्यकर्ताओं ने सरकार के खिलाफ

नारेबाजी शुरू कर दी। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लेना शुरू कर दिया।

UGC के नियमों को बताया 'काला कानून'

करणी सेना के कार्यकर्ताओं ने जनवरी 2026 में जारी UGC के नियमों को 'काला कानून' बताते हुए विरोध जताया। उनका कहना है कि जातिगत भेदभाव की परिभाषा और शिकायतों से जुड़ी प्रक्रिया में सामान्य वर्ग के छात्रों के हितों की पर्याप्त सुरक्षा नहीं की गई है। प्रदर्शनकारियों ने आशंका जताई कि यदि किसी सामान्य वर्ग के छात्र के खिलाफ जातिगत उत्पीड़न की झूठी शिकायत दर्ज होती है, तो जांच के दौरान उसके बचाव के लिए स्पष्ट और पर्याप्त सुरक्षा प्रावधान नहीं हैं। ये आरोप प्रदर्शनकारियों की ओर से लगाए गए हैं।

सवर्ण आयोग बनाने की मांग

कार्यकर्ताओं ने कहा कि सवर्ण वर्ग के छात्रों और अन्य लोगों की शिकायतों को सुनने के लिए देश और प्रदेश में सवर्ण आयोग बनाया जाना चाहिए। उन्होंने UGC के नियमों को रद्द करने की मांग भी उठाई। प्रदर्शनकारियों ने इन प्रावधानों की तुलना ब्रिटिश शासन के रॉलेट एक्ट से करते हुए इन्हें अन्यायपूर्ण बताया। प्रदर्शन में करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष समेत कई पदाधिकारी शामिल रहे।

करणी सेना 50 से ज्यादा सीटों पर लड़ेगी चुनाव जातिवाद के खिलाफ अभियान चलाएगी, भाजपा को भी दी चेतावनी

अम्बेडकरनगर। करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष अभिनव सिंह ने ऐलान किया है कि संगठन आने वाले चुनाव में 50 से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ेगा। उन्होंने बताया कि करणी सेना प्रदेश के हर जिले में अपनी पकड़ मजबूत कर रही है।

सिंह ने कहा कि संगठन जातिवाद के खिलाफ अभियान चलाएगा और समाज को जातियों में बांटने वालों का विरोध करेगा। उन्होंने यह भी बताया कि किसी भी जाति या धर्म का व्यक्ति चुनाव लड़ना चाहेगा, तो संगठन उसे उम्मीदवार बनाने पर विचार करेगा। अम्बेडकरनगर में अभिनव सिंह ने यूजीसी के नियमों को वापस लेने, आरक्षण व्यवस्था में सुधार और शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि हिंदुत्ववादी नेताओं के खिलाफ मुकदमे दर्ज हो रहे हैं, जिसे करणी सेना बर्दाश्त नहीं करेगी। उन्होंने भाजपा सरकार को चेतावनी दी कि अगर उसकी नीतियां नहीं बदलीं और समाज को बांटने वाली बातें जारी रहें, तो संगठन राजनीतिक विरोध करेगा। दिल्ली के मामले पर उन्होंने प्रधानमंत्री के परिवार के खिलाफ गलत भाषा के इस्तेमाल को अनुचित बताया। उन्होंने सरकार से युवाओं के रोजगार पर ध्यान देने और सनातन संस्कृति की शिक्षा को पाठ्यक्रम में अनिवार्य करने की मांग की।



चित्तौड़गढ़ दुर्ग: सुंदरता, रहस्य और शौर्य की अमर धरती जहां हर पत्थर इतिहास सुनाता है

राजस्थान की धरती को यदि वीरता, स्वाभिमान और स्थापत्य कला की धरती कहा जाए तो चित्तौड़गढ़ का नाम सबसे पहले आता है। अरावली की पहाड़ियों के बीच ऊंची चट्टानी पहाड़ी पर खड़ा चित्तौड़गढ़ दुर्ग केवल पत्थरों से बनी कोई इमारत नहीं है, बल्कि यह मेवाड़ के गौरव, राजपूती शौर्य, त्याग और आत्मसम्मान की जीवंत कहानी है। इसकी विशाल दीवारें, ऊंचे बुर्ज, प्राचीन मंदिर, राजमहल, जलाशय और विजय स्तंभ आज भी अपने भीतर सैकड़ों वर्षों का इतिहास समेटे हुए हैं।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग लगभग 180 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित है और इसका विस्तृत परिसर लगभग 700 एकड़ में फैला हुआ है। दुर्ग जिस पहाड़ी पर बना है, उसका स्वरूप प्राकृतिक रूप से अत्यंत मजबूत है। यूनेस्को के अनुसार यह एक ऊंचे, अलग-थलग चट्टानी पठार पर स्थित है और इसकी किलेबंदी पहाड़ी की प्राकृतिक आकृति का अनुसरण करती है। यही प्राकृतिक स्थिति इसे प्राचीन काल में एक अत्यंत मजबूत और सुरक्षित दुर्ग बनाती थी। चित्तौड़ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां प्राकृतिक और स्थापत्य एक-दूसरे में ऐसे घुले-मिले दिखाई देते हैं जैसे पहाड़ी ने स्वयं किले का रूप

ले लिया हो। दूर से देखने पर किला पहाड़ी की चोटी पर फैले एक विशाल नगर जैसा दिखाई देता है। भीतर प्रवेश करने पर महलों, मंदिरों, स्तंभों, कुंडों और पुराने रास्तों की दुनिया सामने आती है।

चित्तौड़ की प्राकृतिक सुंदरता

चित्तौड़गढ़ की सुंदरता केवल उसके महलों और मंदिरों में नहीं है। इसकी असली खूबसूरती उस प्राकृतिक वातावरण में भी है, जिसमें यह दुर्ग सदियों से खड़ा है। अरावली की पहाड़ियों, हरियाली, खुली घाटियों और आसपास के मैदानी क्षेत्र से घिरा यह दुर्ग सूर्योदय और सूर्यास्त के समय विशेष रूप से मनोहारी दिखाई देता है।

किले की ऊंचाई से नीचे देखने पर दूर तक फैला मैदान दिखाई देता है। सुबह के समय जब सूर्य की किरणें किले की प्राचीन दीवारों और बुर्जों पर पड़ती हैं, तो पत्थरों का रंग सुनहरा दिखाई देने लगता है। शाम को सूर्यास्त के समय यही दीवारें लाल और सुनहरी आभा से भर जाती हैं। किले के भीतर मौजूद पुराने जलाशय, कुंड और मंदिर इस प्राकृतिक सुंदरता को और बढ़ाते हैं। यहां का गौमुख कुंड विशेष आकर्षण का केंद्र है। राजस्थान पर्यटन के अनुसार यह एक पवित्र जलाशय

है, जिसमें चट्टान से बने गौमुख से भूमिगत जल का प्रवाह होता है। इस जलाशय के निकट प्राचीन समिद्धेश्वर मंदिर भी स्थित है। चित्तौड़ का वातावरण अपने आप में एक अनुभव है। कहीं प्राचीन मंदिरों की घंटियां सुनाई देती हैं, कहीं ऊंचे विजय स्तंभ की छाया दिखाई देती है और कहीं सदियों पुराने महलों के खंडहर इतिहास की चुप्पी में डूबे नजर आते हैं।

नदियों से जुड़ा चित्तौड़: चित्तौड़गढ़ की भौगोलिक स्थिति को समझने के लिए यहां की नदियों का उल्लेख भी महत्वपूर्ण है। राजस्थान पर्यटन की आधिकारिक जानकारी में चित्तौड़गढ़ दुर्ग को गम्भीरी और बेराच नदी क्षेत्र से जुड़ा बताया गया है। बेराच नदी इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण नदी है और चित्तौड़ के आसपास के भूगोल और इतिहास में इसका विशेष स्थान है। बेराच नदी का संबंध चित्तौड़ क्षेत्र की प्राचीन बस्तियों से भी रहा है। चित्तौड़गढ़ से लगभग 18 किलोमीटर उत्तर में स्थित नगरी प्राचीन नगर बेराच नदी के तट पर बसा था। राजस्थान पर्यटन के अनुसार प्राचीन काल में इसे 'माझीमिका' या 'माध्यमिका' के नाम से जाना जाता था। इससे पता चलता है कि चित्तौड़ का आसपास का क्षेत्र प्राचीन समय से ही मानव सभ्यता

और व्यापारिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहां यह समझना जरूरी है कि किला स्वयं किसी नदी के बीच स्थित जलदुर्ग की तरह नहीं है। इसकी सुरक्षा का सबसे बड़ा आधार इसकी ऊंची पहाड़ी, खड़ी ढलान, विशाल दीवारें और प्राकृतिक भू-आकृति थी। आसपास की नदियां और जलस्रोत क्षेत्र की भौगोलिक संरचना का हिस्सा थे, जबकि किले के भीतर जल संरक्षण की अत्यंत विकसित व्यवस्था बनाई गई थी।

किले का सबसे बड़ा रहस्य, पानी की व्यवस्था: चित्तौड़गढ़ के सबसे रोचक पहलुओं में इसकी जल व्यवस्था भी शामिल है। एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित इतने बड़े दुर्ग में लंबे समय तक हजारों लोगों और सैनिकों के लिए पानी की व्यवस्था करना अपने आप में बड़ी चुनौती थी। लेकिन प्राचीन निर्माताओं ने वर्षा जल, प्राकृतिक जलस्रोतों और जल संचयन की ऐसी व्यवस्था विकसित की कि किला लंबे समय तक बाहरी सहायता के बिना भी टिक सकता था। यूनेस्को के अनुसार राजस्थान के पहाड़ी किलों में व्यापक जल-संचयन संरचनाएं बनाई गई थीं और इनमें से कई आज भी मौजूद हैं। चित्तौड़ की पहाड़ी की प्राकृतिक बनावट भी जल संचय के लिए अनुकूल थी। इसी जल व्यवस्था का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण गौमुख कुंड है। यहां चट्टान से बने गौमुख से पानी आता है और नीचे जलाशय में एकत्र होता है। धार्मिक दृष्टि से भी इस स्थान का महत्व है। यही कारण है कि गौमुख कुंड आज इतिहास, आस्था और प्राकृतिक रहस्य—तीनों का संगम दिखाई देता है। किले के भीतर मौजूद जल संरचनाएं यह प्रमाणित करती हैं कि चित्तौड़ के वास्तुकार केवल युद्ध और सुरक्षा को ध्यान में रखकर निर्माण नहीं कर रहे थे, बल्कि उन्होंने एक ऐसे आत्मनिर्भर दुर्ग की कल्पना की थी जिसमें लंबे समय तक बड़ी आबादी रह सके।

सात द्वारों से होकर किले में प्रवेश: चित्तौड़गढ़ दुर्ग की सुरक्षा व्यवस्था उसकी स्थापत्य कला की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है। पहाड़ी पर चढ़ने के रास्ते में क्रमशः कई विशाल द्वार बनाए गए थे। मुख्य प्रवेश मार्ग पर पाडल पोल, भैरों पोल, हनुमान पोल, गणेश पोल, जोड़ला पोल, लक्ष्मण पोल और राम पोल आते हैं। राम पोल को मुख्य प्रवेश द्वार माना जाता है। इन द्वारों का निर्माण केवल सुंदरता के लिए नहीं हुआ था। प्रत्येक द्वार दुर्ग की सुरक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा था। संकरे और घुमावदार रास्ते शत्रु की सेना के लिए आगे बढ़ना कठिन बनाते थे। ऊंची दीवारों और द्वारों की संरचना ऐसी थी कि दुश्मन को एक के बाद एक सुरक्षा अवरोध पार करना पड़ता। मुख्य मार्ग पर जयमल और कल्ला की स्मृति में बने छत्रियां भी देखने को मिलती हैं। राजस्थान पर्यटन के अनुसार ये 1568 की घेराबंदी से जुड़े वीरों की स्मृति से संबंधित हैं।

विजय स्तंभ : पत्थरों में लिखी विजय गाथा: चित्तौड़गढ़ की पहचान उसके विजय स्तंभ के बिना अधूरी है। महाराणा कुंभा द्वारा बनवाया गया यह नौ मंजिला स्मारक मेवाड़ की सैन्य शक्ति और स्थापत्य



कला का शानदार उदाहरण है। राजस्थान पर्यटन के अनुसार विजय स्तंभ का निर्माण लगभग 1440 से 1448 के बीच हुआ। इसे मालवा और गुजरात के मुस्लिम शासकों पर विजय की स्मृति में बनवाया गया था। लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से बने इस स्तंभ पर देवी-देवताओं और अनेक अलंकरणों की बारीक नक्काशी की गई है। विजय स्तंभ की सबसे बड़ी खूबसूरती इसकी ऊंचाई के साथ-साथ इसकी नक्काशी है। पत्थर पर उकेरी गई मूर्तियां और सजावटी आकृतियां उस समय के शिल्पकारों की असाधारण प्रतिभा का प्रमाण देती हैं। ऊपर पहुंचने पर आसपास के पूरे क्षेत्र का विस्तृत दृश्य दिखाई देता है। इस कारण

विजय स्तंभ केवल विजय का स्मारक नहीं, बल्कि चित्तौड़ की भौगोलिक सुंदरता को देखने का भी अद्भुत स्थान है।

कीर्ति स्तंभ और जैन स्थापत्य: विजय स्तंभ के अलावा चित्तौड़गढ़ में कीर्ति स्तंभ भी महत्वपूर्ण है। यह जैन परंपरा और स्थापत्य कला से जुड़ा प्राचीन स्मारक है। किले के भीतर जैन मंदिरों का एक महत्वपूर्ण समूह भी मौजूद है। राजस्थान पर्यटन के अनुसार चित्तौड़ दुर्ग की सीमा के भीतर छह जैन मंदिर हैं। इनमें भगवान आदिनाथ का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन मंदिरों में की गई बारीक नक्काशी और मूर्तिकला किले की धार्मिक विविधता और स्थापत्य समृद्धि को दर्शाती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि चित्तौड़ केवल सैनिकों और राजाओं का निवास नहीं था। यह धार्मिक, सांस्कृतिक, कलात्मक और सामाजिक जीवन का भी बड़ा केंद्र था।

महलों में छिपा राजसी अतीत: किले के भीतर अनेक महल आज भले ही खंडहरों के रूप में दिखाई देते हों, लेकिन उनकी दीवारें मेवाड़ के राजसी जीवन की झलक देती हैं। राणा कुंभा महल किले के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में है। यह परिसर मेवाड़ के राजदरबार और राजपरिवार के जीवन से जुड़ा रहा। महल के टूटे हुए हिस्से आज भी उसकी भव्यता का अनुमान लगाने के लिए पर्याप्त हैं। रतन सिंह महल भी किले की प्रमुख इमारतों में शामिल है। राजस्थान पर्यटन के अनुसार यह राजपरिवार के शीतकालीन निवास से जुड़ा महल था और एक छोटे जलाशय के पास स्थित है। किले में पद्मिनी महल का नाम भी विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इससे जुड़ी कथाएं राजस्थान की लोक-स्मृति में गहराई से मौजूद हैं। हालांकि रानी पद्मिनी और अलाउद्दीन खिलजी से संबंधित कई लोकप्रिय विवरण साहित्यिक और लोक परंपराओं से जुड़े हैं, इसलिए उन्हें प्रमाणित इतिहास से अलग समझना आवश्यक है।

मीरा बाई और भक्ति की धारा: चित्तौड़ केवल युद्ध और तलवारों की कहानी नहीं है। इसकी पहचान भक्ति और आध्यात्मिकता से भी जुड़ी है। किले में स्थित मीरा मंदिर कृष्ण भक्त कवयित्री मीरा बाई की स्मृति से जुड़ा है। मीरा बाई ने अपने भक्ति साहित्य में कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण व्यक्त किया। चित्तौड़ में उनका संबंध मेवाड़ के राजपरिवार से रहा। इस कारण किले की कहानी में तलवार और भक्ति दोनों की परंपराएं साथ-साथ दिखाई देती हैं। इसी प्रकार कालिका माता मंदिर भी किले का महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। राजस्थान पर्यटन के अनुसार इसका मूल निर्माण 8वीं शताब्दी से जुड़ा है और बाद में राणा हम्मीर के समय इसका पुनर्निर्माण हुआ। बाद में इसे देवी काली को समर्पित किया गया।

चित्तौड़ के रहस्य: चित्तौड़गढ़ के साथ कई ऐसी कथाएं जुड़ी हैं जिन्हें स्थानीय लोककथाओं और इतिहास के बीच समझना पड़ता है। किले की प्राचीनता, विशालता और बार-बार हुए युद्धों ने इसके चारों ओर रहस्य और रोमांच की अनेक कहानियां पैदा की हैं।



किले की सुनसान दीवारों, पुराने महलों और भूमिगत हिस्सों को लेकर स्थानीय स्तर पर कई किंवदंतियां सुनाई जाती हैं। कुछ स्थानों को गुप्त रास्तों और सुरंगों से जोड़कर देखा जाता है। युद्ध के समय ऐसे मार्गों और संरचनाओं का उपयोग होने की संभावनाएं स्वाभाविक थीं, लेकिन प्रत्येक लोकप्रिय कथा को ऐतिहासिक तथ्य मानना उचित नहीं है। बड़ा रहस्य शायद स्वयं यह है कि इतनी ऊंची पहाड़ी पर इतने विशाल दुर्ग में लंबे समय तक जीवन कैसे चलता रहा होगा। इसके पीछे उत्तर है— जल संरक्षण, कृषि, भंडारण, धार्मिक परिसर, राजमहल और आवासीय क्षेत्र का सुव्यवस्थित विकास। यूनेस्को के अनुसार चित्तौड़ पूर्व सिसोदिया राजधानी था और यहां 8वीं से 16वीं शताब्दी तक के अनेक महत्वपूर्ण स्थापत्य अवशेष मौजूद हैं। यही विविधता इसे भारत के विशिष्ट दुर्गों में स्थान देती है।

तीन बड़ी घेराबंदियां और किले की पहचान: चित्तौड़ की सुंदरता के पीछे उसका संघर्षपूर्ण इतिहास भी है। इस दुर्ग ने इतिहास में तीन प्रसिद्ध घेराबंदियां झेली हैं। राजस्थान पर्यटन के अनुसार किले पर 1303 में अलाउद्दीन खिलजी, 16वीं शताब्दी में गुजरात के बहादुर शाह और 1567-68 में मुगल सम्राट अकबर ने हमला किया। इन युद्धों ने किले को नुकसान पहुंचाया, लेकिन हर संघर्ष के बाद चित्तौड़ की पहचान और मजबूत होती गई। यहां की वीरगाथाएं राजस्थान के लोकगीतों और साहित्य का हिस्सा बन गईं। 1567-68 की घेराबंदी में जयमल और पत्ता जैसे योद्धाओं की वीरता की स्मृति आज भी किले से जुड़ी हुई है। किले के रास्ते में उनके सम्मान में बनी छतरियां इस इतिहास की याद दिलाती हैं।

किला या एक जीवित शहर ?: चित्तौड़गढ़ की सबसे अनोखी विशेषता यह है कि इसे केवल एक सैन्य दुर्ग के रूप में देखना अधूरा होगा। यह कभी एक विशाल राजकीय और आवासीय नगर भी था। किले की दीवारों के भीतर महल, मंदिर, बाजार, जलाशय और अन्य संरचनाएं थीं। यानी यहां केवल राजा और सैनिक ही नहीं रहते थे, बल्कि सामान्य लोग, व्यापारी, कारीगर और धार्मिक समुदाय भी रहते थे। यूनेस्को के अनुसार राजस्थान के पहाड़ी किलों की विशेषता यही थी कि उनकी सुरक्षा दीवारों के भीतर शहरी केंद्र, महल, व्यापारिक क्षेत्र, मंदिर और अन्य इमारतें विकसित हुईं। इस दृष्टि से चित्तौड़ को एक विशाल पहाड़ी नगर के रूप में समझना अधिक उचित है।

स्थापत्य कला की अद्भुत मिसाल: चित्तौड़गढ़ की स्थापत्य शैली में राजपूत,

धार्मिक और स्थानीय शिल्प परंपराओं का सुंदर मेल दिखाई देता है। यहां के मंदिरों की शिखर शैली, स्तंभों की नक्काशी, महलों के झरोखे, छतरियां और विशाल द्वार किले को अलग पहचान देते हैं। किले की दीवारें पहाड़ी की प्राकृतिक आकृति के साथ चलती हैं। इससे ऐसा लगता है जैसे दीवारें चट्टानों से ही निकल रही हों। यूनेस्को के दस्तावेज में भी किले की दीवारों को पहाड़ी के स्वरूप का अनुसरण करने वाली विशाल किलेबंदी के रूप में वर्णित किया गया है। यही प्राकृतिक और मानवीय वास्तुकला का मेल चित्तौड़ को सामान्य किलों से अलग बनाता है।

आज का चित्तौड़गढ़: आज चित्तौड़गढ़ भारत के सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों में शामिल है। वर्ष 2013 में चित्तौड़गढ़ को राजस्थान के छह पहाड़ी किलों के समूह के साथ यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। लोग विजय स्तंभ, कीर्ति स्तंभ, राणा कुम्भा महल, पद्मिनी महल, मीरा मंदिर, कालिका माता मंदिर, गौमुख कुंड और किले के विशाल द्वारों को देखने पहुंचते हैं। किले में आयोजित होने वाला लाइट एंड साउंड शो भी इसकी ऐतिहासिक गाथाओं को दर्शकों के सामने प्रस्तुत करता है। राजस्थान पर्यटन के अनुसार इस कार्यक्रम में किले की स्थापना, उसके शासकों, युद्धों और ऐतिहासिक घटनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

निष्कर्ष : चित्तौड़ केवल किला नहीं, एक भावना है:

चित्तौड़गढ़ को केवल एक ऐतिहासिक इमारत कहना उसके महत्व को छोटा करना होगा। यह एक ऐसी जगह है जहां प्रकृति, इतिहास, स्थापत्य, धर्म, युद्ध, प्रेम, त्याग और लोककथाएं एक साथ दिखाई देती हैं। ऊंची पहाड़ी पर खड़ा यह दुर्ग आज भी आने वाले हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है। इसके विशाल द्वार युद्धों की कहानी कहते हैं, विजय स्तंभ विजय की याद दिलाता है, मंदिर भक्ति की धारा दिखाते हैं, गौमुख कुंड प्राचीन जल विज्ञान की बुद्धिमत्ता का प्रमाण देता है और महलों के खंडहर मेवाड़ के राजसी वैभव की याद दिलाते हैं। किले की सबसे बड़ी खूबसूरती शायद उसके टूटे हुए पत्थरों में छिपी है। ये पत्थर बताते हैं कि समय ने बहुत कुछ बदला, साम्राज्य आए और चले गए, महलों की चमक फीकी पड़ गई, लेकिन चित्तौड़ की पहचान आज भी कायम है। चित्तौड़गढ़ इसलिए अमर है क्योंकि यह केवल पत्थरों का दुर्ग नहीं, बल्कि मेवाड़ के इतिहास और भारतीय विरासत की एक जीवित स्मृति है।



चित्तौड़ की घेराबंदी : वीरता, जौहर और बलिदान की ऐतिहासिक कथा

राजस्थान की धरती पर अनेक दुर्गों ने इतिहास के उतार-चढ़ाव देखे हैं, लेकिन चित्तौड़गढ़ का किला अपनी वीरता, स्वाभिमान और बलिदान की गाथाओं के कारण सबसे अलग स्थान रखता है। चित्तौड़ पर इतिहास में तीन बड़े आक्रमण हुए, लेकिन वर्ष 1567-68 में मुगल सम्राट अकबर द्वारा की गई घेराबंदी सबसे निर्णायक मानी जाती है। यह वह समय था जब मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह द्वितीय के शासन में चित्तौड़ राजपूत प्रतिरोध का प्रमुख केंद्र था।

अकबर की नजर चित्तौड़ पर: 16वीं शताब्दी के मध्य तक अकबर उत्तर भारत में अपनी सत्ता मजबूत कर चुका था। मेवाड़ उसके लिए केवल एक राज्य नहीं था, बल्कि सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र था। चित्तौड़ का विशाल दुर्ग मेवाड़ की शक्ति और सिसोदिया राजवंश की स्वतंत्रता का प्रतीक था। महाराणा उदयसिंह ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की थी। अकबर ने चित्तौड़ को अपने नियंत्रण में लेने का निश्चय किया। वर्ष 1567 में उसकी विशाल मुगल सेना चित्तौड़ की ओर बढ़ी। राजस्थान पर्यटन के अनुसार, मुगल सेना के पहुंचने के बाद मेवाड़ के सरदारों ने विचार किया कि महाराणा उदयसिंह और उनके परिवार को सुरक्षित पहाड़ी क्षेत्र में ले जाना उचित होगा, जबकि किले की रक्षा का दायित्व वीर राठौड़ जयमल और सिसोदिया पत्ता को सौंपा गया।

किले की तैयारी: महाराणा उदयसिंह किले से बाहर निकल गए, लेकिन चित्तौड़ की दीवारों के भीतर हजारों सैनिक और नागरिक रह गए। अब किले की रक्षा का भार जयमल और पत्ता के कंधों पर था। जयमल मेड़ता के वीर योद्धा थे और युद्ध संचालन में कुशल माने जाते थे। पत्ता कम आयु के होने के बावजूद असाधारण साहस के लिए प्रसिद्ध थे। दोनों ने सैनिकों को संगठित किया और स्पष्ट कर दिया कि चित्तौड़ की रक्षा अंतिम सांस तक की जाएगी। मुगल सेना ने किले को चारों ओर से घेर लिया। चित्तौड़ की ऊंची और मजबूत दीवारें तथा उसकी प्राकृतिक स्थिति मुगल सेना के लिए बड़ी चुनौती थीं। सीधे आक्रमण में भारी नुकसान की आशंका थी। इसलिए मुगलों ने धीरे-धीरे किले की दीवारों तक पहुंचने के लिए **सुरंगें, मोर्चे और मिट्टी के रास्ते** तैयार करने शुरू किए। घेराबंदी कई महीनों तक चलती रही।

महीनों तक चला संघर्ष: मुगल सेना के पास बड़ी संख्या में सैनिक, तोपें और युद्ध सामग्री थी, लेकिन चित्तौड़ के रक्षकों का मनोबल ऊंचा था। किले के भीतर से राजपूत सैनिक लगातार मुगल मोर्चों पर हमला करते थे। मुगल सैनिक जब किले की दीवारों के पास पहुंचने के लिए सुरंगें बनाते, राजपूत सैनिक उन्हें रोकने का प्रयास करते। कई बार मुगल सेना को भारी नुकसान उठाकर पीछे हटना पड़ा। दूसरी ओर किले में भी भोजन, हथियार और अन्य आवश्यक वस्तुओं की



कमी धीरे-धीरे बढ़ने लगी। अकबर ने किले की मजबूत दीवारों को तोड़ने के लिए लगातार तोपों से गोलाबारी कराई। मुगल सेना ने दीवारों के कमजोर हिस्सों को निशाना बनाना शुरू किया। फिर भी चित्तौड़ के रक्षक हार मानने के लिए तैयार नहीं थे।

जयमल और अकबर का निर्णायक क्षण: घेराबंदी अपने अंतिम चरण में पहुंच चुकी थी। किले की दीवारों को हुए नुकसान की मरम्मत स्वयं जयमल रात के समय करवाते थे। वे सैनिकों का उत्साह बढ़ाते और टूटे हुए हिस्सों को फिर से मजबूत करवाते थे। फरवरी 1568 की एक रात युद्ध का निर्णायक मोड़ आया। परंपरागत विवरणों के अनुसार, किले की मरम्मत और सुरक्षा व्यवस्था देख रहे जयमल पर अकबर ने बंदूक से गोली चलाई। जयमल घायल होकर वीरगति को प्राप्त हुए। उनके मारे जाने से किले के रक्षकों को गहरा आघात लगा। जयमल की मृत्यु के बाद भी पत्ता और अन्य राजपूत योद्धाओं ने संघर्ष जारी रखा। उन्हें पता था कि अब किले की स्थिति अत्यंत कठिन हो चुकी है, लेकिन आत्मसमर्पण का विचार उनके मन में नहीं था।

जौहर की रात: जयमल की मृत्यु और किले की बिगड़ती स्थिति के बाद राजपूतों ने समझ लिया कि अगला दिन अंतिम युद्ध का दिन हो सकता है। चित्तौड़ की परंपरा में इस अवसर पर महिलाओं द्वारा जौहर और पुरुषों द्वारा अंतिम युद्ध अर्थात् साका करने का वर्णन मिलता है। किले के भीतर अनेक स्थानों पर जौहर की तैयारी हुई। महिलाओं ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए अग्नि में प्रवेश किया। पुरुषों ने केसरिया धारण किया और अंतिम युद्ध के लिए तैयार हुए।

चित्तौड़ की यह घटना केवल युद्ध की कथा नहीं थी, बल्कि उस समय के राजपूत समाज में सम्मान और आत्मबलिदान की उस धारणा को दर्शाती है, जिसके अनुसार पराजय और बंदी बनाए जाने की अपेक्षा मृत्यु

को स्वीकार करना बेहतर माना जाता था।

अंतिम साका: 23 फरवरी 1568 को चित्तौड़ के द्वार खोले गए। राजपूत योद्धा केसरिया वस्त्र पहनकर अंतिम युद्ध के लिए बाहर निकले। पत्ता और उनके साथियों ने मुगल सेना पर प्रचंड हमला किया। संख्या और संसाधनों में भारी अंतर के बावजूद राजपूत योद्धा आखिरी क्षण तक लड़ते रहे। अंततः मुगल सेना किले में प्रवेश करने में सफल हुई और चित्तौड़ मुगल नियंत्रण में चला गया। राजस्थान पर्यटन भी जयमल और पत्ता के बलिदान को चित्तौड़ की रक्षा की वीरगाथा का महत्वपूर्ण हिस्सा मानता है।

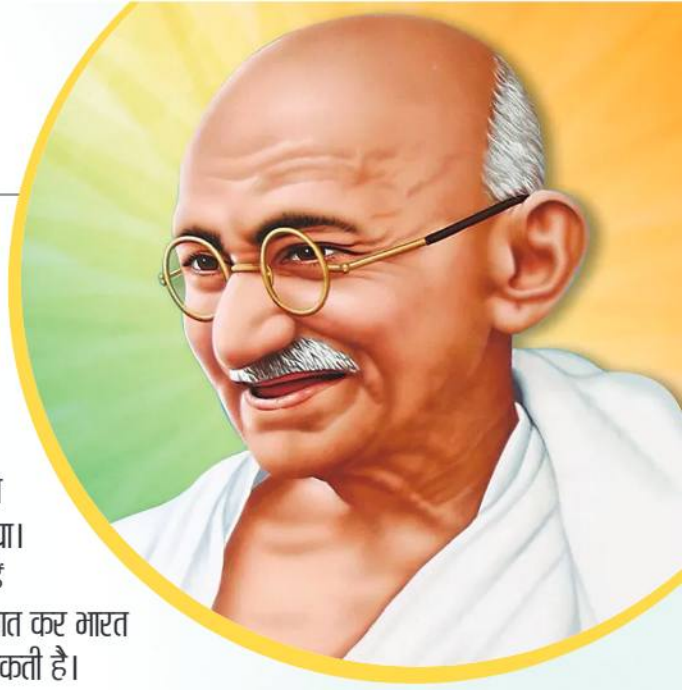
चित्तौड़ का पतन और भारी जनहानि: किले पर अधिकार करने के बाद चित्तौड़ में भारी जनहानि हुई। समकालीन और बाद के स्रोतों में मृतकों की संख्या को लेकर अलग-अलग आंकड़े मिलते हैं, इसलिए इस संख्या को लेकर इतिहासकारों में सावधानी बरतना उचित है। इतना स्पष्ट है कि किले पर कब्जे के बाद बड़ी संख्या में लोग मारे गए और चित्तौड़ को भारी विनाश झेलना पड़ा। अकबर ने चित्तौड़ की विजय को अपनी बड़ी सैन्य उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया। उसने किले का नियंत्रण अपने अधिकारियों को सौंप दिया और वापस लौट गया। चित्तौड़ की इस विजय के बाद मेवाड़ की राजनीतिक स्थिति बदल गई, लेकिन मेवाड़ का प्रतिरोध समाप्त नहीं हुआ।

चित्तौड़ के बाद: चित्तौड़ के पतन के बाद महाराणा उदयसिंह ने अरावली क्षेत्र में अपनी शक्ति बनाए रखी। उदयपुर आगे चलकर मेवाड़ का प्रमुख केंद्र बना। महाराणा उदयसिंह के बाद उनके पुत्र महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष जारी रखा। इस प्रकार 1567-68 की चित्तौड़ की घेराबंदी केवल एक किले की हार नहीं थी। मुगल सेना ने दुर्ग पर अधिकार जरूर कर लिया, लेकिन चित्तौड़ के योद्धाओं की वीरता और मेवाड़ की स्वतंत्रता की भावना को समाप्त नहीं कर सकी। आगे चलकर यही भावना महाराणा प्रताप के संघर्ष में दिखाई दी। चित्तौड़ की घेराबंदी की सबसे बड़ी ऐतिहासिक विरासत यही है कि किला गिर सकता है, सत्ता बदल सकती है, लेकिन स्वतंत्रता और स्वाभिमान की भावना को पराजित करना आसान नहीं होता।

आज चित्तौड़गढ़ की दीवारें, जयमल-पत्ता की स्मृतियां और किले के भीतर मौजूद स्मारक उस संघर्ष की कहानी सुनाते हैं। यूनेस्को के दस्तावेज भी चित्तौड़ को सिसोदिया वंश की पूर्व राजधानी और तीन प्रसिद्ध ऐतिहासिक घेराबंदियों से जुड़े महत्वपूर्ण दुर्ग के रूप में दर्ज करते हैं। चित्तौड़ की घेराबंदी इसलिए इतिहास में अमर है क्योंकि इसमें एक और विशाल मुगल साम्राज्य की सैन्य शक्ति थी, तो दूसरी ओर अपने दुर्ग और स्वाभिमान की रक्षा के लिए अंतिम सांस तक लड़ने वाले राजपूत योद्धा। जयमल और पत्ता का बलिदान इसी संघर्ष का सबसे प्रसिद्ध अध्याय बन गया।

युवा पीढ़ी के पथ-प्रदर्शक गांधीजी के जीवन-मूल्य

वैसे तो गांधीजी की वैश्विक प्रतिष्ठा एक ऐसे नेता के रूप में व्याप्त है, जिन्होंने भारत को ब्रिटिश गुलामी से मुक्त कराने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। लेकिन इसके साथ ही उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण भी मौजूद थे, जो उन्हें असाधारण और महापुरुष सिद्ध करते हैं। उनके ऐसे ही कुछ गुणों को आत्मसात कर भारत की युवा पीढ़ी, ना केवल अपना जीवन बल्कि देश-समाज की दिशा भी बदल सकती है।



भले भारत आज दुनिया के नक्शे में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक ताकत रखने वाला देश हो, लेकिन यह कहना कतई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत को दुनिया में इन उपलब्धियों के साथ ही गांधीजी के देश के रूप में भी जाना जाता है।

बन गए देश की पहचान: भले हम हिंदुस्तानी राजनीति में या रोजमर्रा के जीवन में गांधीजी के आदर्शों पर ना चलकर सिर्फ उनका ढिंढोरा अधिक पीटते हों, लेकिन यह सच्चाई है कि आज दुनिया में अगर 20वीं सदी की किसी शख्सियत को सर्वाधिक सम्मान दिया जाता है, तो वह महात्मा गांधी ही हैं। यह अकारण नहीं है कि 1982 में रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गांधी' के प्रदर्शित होने के बाद पश्चिमी देशों में, विशेषकर ब्रिटेन में युवाओं के बीच खादी का जबर्दस्त चलन बढ़ गया था। दुनिया के 150 से भी ज्यादा देशों में अगर किसी एक राजनेता की मूर्तियां लगी हुई हैं, तो वह अकेले गांधीजी ही हैं। गांधीजी और कार्ल मार्क्स दुनिया की दो ऐसी शख्सियतें हैं, जिनकी सबसे ज्यादा जीवनियां प्रकाशित हुई हैं। इस सदी के बाद 20वीं सदी की कुछ गिनी-चुनी शख्सियतें ही याद रखी जाएंगी और जो याद रखी जाएंगी, उनमें गांधी सबसे प्रमुख होंगे।

पूरी दुनिया में मिली प्रतिष्ठा: वास्तव में गांधीजी ना सिर्फ हमारी आजादी की लड़ाई के सबसे प्रासंगिक

राजनेता थे, स्वतंत्रता सेनानी थे बल्कि आज भी भारत की सबसे बड़ी पहचान वाले महापुरुष माने जाते हैं। इस समय दुनिया के सारे लोकतांत्रिक देशों में जिस एक राजनेता को सबसे ज्यादा उद्धृत किया जाता है, वह कोई और नहीं, महात्मा गांधी ही हैं। अमेरिका में तो जैसे राजनेताओं के बीच होड़ लगी रहती है कि गांधीजी को कितना ज्यादा उद्धृत किया जाए। पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा तो अब राष्ट्रपति भी नहीं हैं, फिर भी वे अपने संबोधनों में सबसे ज्यादा अगर किसी वैश्विक शख्सियत को याद करते हैं, तो वह गांधीजी हैं।

बहुत कुछ सीख सकती है युवा पीढ़ी: आमतौर पर माना जाता है कि बड़े से बड़े राजनेता, दो पीढ़ी के बाद अप्रासंगिक हो जाते हैं। लेकिन गांधीजी ऐसी अद्वितीय शख्सियत हैं, जिनके इस दुनिया से गुजरने के पांच पीढ़ियों के बाद आज भी प्रासंगिकता में कोई कमी नहीं आई है। 20वीं सदी के सबसे महान भारतीय से वर्तमान 21वीं सदी की महत्वाकांक्षी पीढ़ी भी बहुत कुछ सीख सकती है। एक यह भी याद रखने की बात है कि गांधीजी से सीखना, सबसे सरल है। भले शुरू में लगे कि यह बहुत कठिन है। बहरहाल, आइए जानें कि युवा पीढ़ी को कौन-से महत्वपूर्ण गुण या जीवन-मूल्य हैं, जो गांधीजी से सीख सकती है।

सच्चाई-ईमानदारी: सबसे पहली बात जो आज के

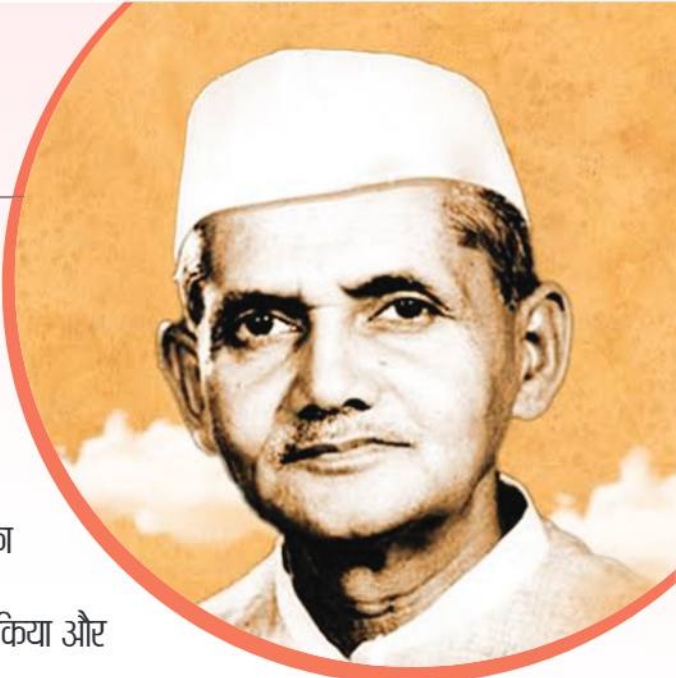
युवा गांधीजी से सीख सकते हैं, वो यही है कि जीवन में सच्चे और ईमानदार रहें। यह एक ऐसा बुनियादी सच है, जिसके बारे में कहना चाहिए कि इसे सीखना कोई रॉकेट साइंस नहीं है। लेकिन सच्चाई यह भी है कि इस साधारण सी बात को सीखना कई बार बहुत कठिन लगता है, क्योंकि ईमानदारी से जीवन जीना आसान तो है, लेकिन इसको अपनी आदत बना लेना बहुत मुश्किल है। दरअसल, जब हम ईमानदार और सच्चे बनते हैं, तो दुनिया के ज्यादातर लोग या तो हमारे विरोध में होते हैं या हमारे लिए बाधाएं खड़ी कर रहे होते हैं। लेकिन यह भी सच है कि जब ईमानदारी और सच्चाई हमारी जिंदगी का अभिन्न हिस्सा बन जाती है तो हर कोई हमारे पीछे आता है।

अहिंसा: गांधीजी अहिंसा की सिर्फ बात ही नहीं कहते थे बल्कि अपने व्यावहारिक जीवन के जरिए अहिंसा के सिद्धांत को जीते थे। इसलिए अगर गांधीजी के प्रति आज का युवा वाकई श्रद्धा व्यक्त करना चाहता है तो उसे अहिंसक बनना ही चाहिए। अहिंसा दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने का सबसे अच्छा दर्शन है, क्योंकि जिस चीज को हम अहिंसा के जरिए नहीं पा सकते, उस चीज को हम किसी भी दूसरे जरिए से नहीं पा सकते। अहिंसा का मतलब सिर्फ जीवों की हत्या ना करना ही नहीं है बल्कि अहिंसा का एक अर्थ हर मामूली से मामूली व्यक्ति और उसके अस्तित्व को स्वीकार करना भी है। जब हम दूसरे के अस्तित्व को स्वीकारते हैं, तो हम अहिंसक हो जाते हैं।

क्षमाशीलता-दृढ़ता: क्षमाशील और दृढ़ रहना, दो ऐसे विचार हैं, जो हर युवा को गांधीजी से सीखने चाहिए। गांधीजी मानते थे कि अगर हम किसी को दिल से क्षमा कर देते हैं तो बड़े से बड़ा जख्म भी भर जाता है और अगर हम किसी को क्षमा नहीं करते तो संतोष पाने का कोई जरिया नहीं है। जब हम दूसरों को क्षमा करते हैं तो अपने अंदर के क्रोध और घृणा जैसे दुगुणों से भी मुक्ति पा लेते हैं।

शास्त्री जी सादगी, ईमानदारी और राष्ट्रसेवा की मिसाल

भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती हर वर्ष 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी जयंती के साथ मनाई जाती है। शास्त्री जी का जीवन सादगी, ईमानदारी, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और देशभक्ति का प्रेरणादायी उदाहरण है। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में देश का नेतृत्व किया और अपने छोटे से कार्यकाल में भारतीय राजनीति पर गहरी छाप छोड़ी।



लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में हुआ था। उनके पिता शारदा प्रसाद श्रीवास्तव एक शिक्षक और बाद में राजस्व विभाग में कार्यरत थे। बचपन में ही पिता का निधन हो जाने के कारण शास्त्री जी का पालन-पोषण कठिन परिस्थितियों में हुआ। आर्थिक परेशानियों के बावजूद उन्होंने शिक्षा के प्रति अपना समर्पण बनाए रखा। उन्होंने काशी विद्यापीठ से शिक्षा प्राप्त की। यहीं उन्हें 'शास्त्री' की उपाधि मिली, जिसे उन्होंने अपने नाम का हिस्सा बना लिया। उन्होंने जतिनसूचक उपनाम का प्रयोग छोड़कर सादगी और समानता का संदेश दिया।

स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका: लाल बहादुर शास्त्री महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित थे। किशोरावस्था से ही वे स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गए। उन्होंने असहयोग आंदोलन और बाद के आंदोलनों में भाग लिया तथा ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष करते हुए कई बार जेल गए। स्वतंत्रता के बाद भी उन्होंने सत्ता को सुविधा का माध्यम नहीं, बल्कि जनसेवा का दायित्व माना। उत्तर प्रदेश में परिवहन और पुलिस विभाग सहित विभिन्न जिम्मेदारियां संभालने के बाद वे राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे।

रेल मंत्री के रूप में दिया नैतिकता का उदाहरण: केंद्रीय रेल मंत्री के रूप में शास्त्री जी के कार्यकाल की एक घटना आज भी उनके नैतिक मूल्यों

के उदाहरण के रूप में याद की जाती है। 1956 में एक रेल दुर्घटना के बाद उन्होंने रेल मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार की, हालांकि व्यक्तिगत रूप से वे उसके लिए जिम्मेदार नहीं थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उनके इस्तीफे को स्वीकार किया। यह घटना भारतीय सार्वजनिक जीवन में जवाबदेही और नैतिक जिम्मेदारी के उदाहरण के रूप में अक्सर उद्धृत की जाती है।

देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने: जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद 9 जून 1964 को लाल बहादुर शास्त्री ने भारत के दूसरे प्रधानमंत्री के रूप में पदभार संभाला। उस समय देश के सामने खाद्यान्न की कमी, आर्थिक चुनौतियां और सुरक्षा संबंधी गंभीर समस्याएं थीं। शास्त्री जी ने किसानों और जवानों दोनों की भूमिका को देश की मजबूती के लिए महत्वपूर्ण माना। इसी भावना को व्यक्त करते हुए उन्होंने प्रसिद्ध नारा दिया—

“जय जवान, जय किसान”: यह नारा भारत की सुरक्षा और कृषि व्यवस्था, दोनों के महत्व को रेखांकित करता है। उनके नेतृत्व में देश ने कृषि उत्पादन बढ़ाने और खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने की दिशा में प्रयास तेज किए।

1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध: प्रधानमंत्री के रूप में शास्त्री जी के कार्यकाल में 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध हुआ। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में

देश का नेतृत्व किया और भारतीय सेना का मनोबल बढ़ाया। उनके नेतृत्व में भारत ने दृढ़ता के साथ अपनी सुरक्षा का सामना किया। युद्ध के दौरान उनका व्यक्तित्व देशवासियों के सामने एक ऐसे नेता के रूप में उभरा, जो शांत स्वभाव के बावजूद राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर दृढ़ निर्णय लेने के लिए तैयार था।

सादगी थी उनकी सबसे बड़ी पहचान: लाल बहादुर शास्त्री का जीवन बेहद सादा था। प्रधानमंत्री बनने के बाद भी उन्होंने सामान्य जीवनशैली को नहीं छोड़ा। उनके व्यक्तित्व में दिखावा नहीं था। वे अपने आचरण से यह संदेश देते थे कि सार्वजनिक पद व्यक्ति को विशेषाधिकार नहीं, बल्कि अधिक जिम्मेदारी देता है। उनकी ईमानदारी और सादगी के अनेक प्रसंग आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। यही कारण है कि भारतीय राजनीति में उनका नाम एक ऐसे नेता के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक जीवन के बीच कोई बड़ा अंतर नहीं रखा।

ताशकंद में निधन: भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद शांति स्थापित करने के प्रयासों के तहत भारत और पाकिस्तान के बीच तашकंद समझौता हुआ। शास्त्री जी ने 10 जनवरी 1966 को तашकंद में इस समझौते पर हस्ताक्षर किए। इसके अगले दिन 11 जनवरी 1966 को तашकंद में उनका निधन हो गया। उनका निधन देश के लिए एक बड़ी क्षति थी। उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

आज भी प्रासंगिक है शास्त्री जी का जीवन: लाल बहादुर शास्त्री का जीवन केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं है, बल्कि आज भी सार्वजनिक जीवन और समाज के लिए प्रेरणा है। ईमानदारी, सादगी, अनुशासन, जिम्मेदारी और राष्ट्र के प्रति समर्पण जैसे मूल्य उनके जीवन की पहचान रहे। लाल बहादुर शास्त्री जयंती हमें यह याद दिलाती है कि देश की सेवा केवल बड़े पदों से नहीं, बल्कि अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाने से होती है। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों को सादगी के साथ राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने की प्रेरणा देता रहेगा।

पुरखों से पाएं सुख-शांति समृद्धि का आशीर्वाद

पुराणों में इस दौरान अपने पूर्वजों को श्राद्ध एवं तर्पण के द्वारा तृप्त करने का विधान दिया गया है। इससे न केवल जीवन में शांति-समृद्धि आती है, पुरखों का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है।



पितृ-पक्ष में हम पूर्वजों को याद करते हैं और उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं। इन दिनों में हमें अपने मन को शांत एवं पवित्र रखकर पितरों के लिए बताए गए अनुष्ठान करने चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं तो पितृ प्रसन्न होकर हमें सुख, शांति एवं समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

पवित्र अवसर है पितृ-पक्ष: पितृ-पक्ष पूर्वजों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान प्रकट करने का एक विशेष, पवित्र अवसर है। पितृपक्ष काल में परिजन न केवल अपने पूर्वजों को याद करते हैं, बल्कि उनकी आत्मा की शांति एवं मुक्ति के लिए विभिन्न अनुष्ठान भी करते-कराते हैं। श्राद्ध-पक्ष में पितरों के प्रति श्रद्धा भाव से किए जाने वाले अनुष्ठानिक कार्य कल्याणकारी माने गए हैं।

पौराणिक मान्यता: पुराणों में वर्णित श्राद्ध कर्म द्वारा लोग पितरों-पूर्वजों का स्मरण कर, उन्हें श्रद्धा अर्पित करते हैं। अपने जन्म एवं जीवन दाताओं को याद करते रहना, इसके लिए उनका आभार प्रकट करना, पुत्र-पौत्रादि का धर्म है। निश्चित रूप से ऐसा कर मन को शांति मिलती है। गरुड़ पुराण के अनुसार जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तो उसकी आत्मा तुरंत मोक्ष प्राप्त नहीं करती, बल्कि विभिन्न योनियों से होते हुए पितृलोक

में पहुंचती है। यदि मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार तथा उसके बाद के कर्मकांड ठीक से नहीं किए जाएं या हो पाएं, तो मृत-आत्मा भटकती है एवं अतृप्त रहती है। ऐसे में पितरों का अतृप्त आत्मा अपने वंशजों से रुष्ट हो जाती है। पितरों के अतृप्त आत्मा की स्थिति में परिवार में विभिन्न प्रकार की विघ्न-बाधाएं आती हैं, जिसे पितृ दोष कहा जाता है।

गरुड़ पुराण, मार्कंडेय पुराण एवं विष्णु पुराण जैसे ग्रंथों में श्राद्ध के महत्व को विस्तार से बताया गया है। इन ग्रंथों के अनुसार, पितृ-पक्ष के दौरान पितृ-गण पृथ्वी-लोक पर आते हैं तथा अपने वंशजों द्वारा किए गए तर्पण एवं श्राद्ध को स्वीकार करते हैं। जो व्यक्ति पूरी श्रद्धा से श्राद्ध करता है, उसे पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है, जिससे उसके जीवन में सुख, समृद्धि, आयु, यश, धन आदि की प्राप्ति होती है। मार्कंडेय पुराण में कहा गया है कि 'श्राद्ध से तृप्त होकर पितृ-गण श्राद्धकर्ता को दीर्घायु, संतति, धन, विद्या, सुख, राज्य, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करते हैं।' महर्षि सुमंतु के अनुसार, 'इस संसार में श्राद्ध से बढ़कर कोई दूसरा कल्याणप्रद कर्म नहीं है।'

ऐसे होते हैं पितृ प्रसन्न: पितरों को प्रसन्न रखने एवं उनका आशीर्वाद पाने के लिए पितृ-पक्ष में नियमानुसार कुछ विशेष कार्य तथा अनुष्ठान किए



जाते हैं, जिनका विवरण शास्त्रों में मिलता है।

तर्पण: प्रतिदिन सुबह स्नान के बाद दक्षिण दिशा की ओर मुख कर जल में काला तिल, जौ एवं कुश मिलाकर तर्पण करना चाहिए। यह पितरों को जल अर्पित करने का एक उपाय है, जिससे उनकी प्यास बुझती है।

श्राद्ध की विधि: पितरों की मृत्यु तिथि के अनुसार श्राद्ध कर्म करना चाहिए। श्राद्ध के दिन किसी योग्य ब्राह्मण को आमंत्रित कर भोजन कराएं। भोजन में खीर, पूड़ी तथा पितरों की पसंद के सात्विक भोज्य पदार्थ शामिल करें।

पिंडदान: आटा, जौ, चावल एवं तिल से बने पिंडों को पितरों को अर्पित किया जाता है। बोध गया जैसे पवित्र तीर्थ-स्थलों पर पिंडदान का विशेष महत्व माना गया है। हालांकि यह कार्य निकटतम किसी भी पवित्र धार्मिक-स्थल, नदी, तालाब, कुंड, सागर कहीं भी किया जा सकता है।

दान-पुण्य: श्राद्ध-पक्ष में दान का विशेष महत्व है। दान करने से न केवल पितृ प्रसन्न होते हैं, बल्कि जीवन की परेशानियां भी दूर होती हैं। पितृ-पक्ष में दान के योग्य मानी जाने वाली निम्न वस्तुएं उचित मानी जाती हैं। इसमें आप अन्न, फल, चांदी का दान कर सकते हैं। श्राद्ध कर्म के दौरान भोजन का कुछ हिस्सा गाय, कौवे, कुत्ते एवं चींटियों को भी खिलाना चाहिए।

ये भी है जरूरी: पितृ-पक्ष के 15 दिनों तक सात्विक जीवन का पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। पितृ-पक्ष के पंद्रह दिन परिवार में लहसुन, प्याज एवं मांसाहार का सेवन पूरी तरह से वर्जित होता है। इन दिनों ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए तथा अपने घर एवं मन दोनों को पवित्र रखें। प्रतिदिन शाम के समय घर की दक्षिण दिशा में सरसों के तेल का दीपक जलाना चाहिए। पीपल के पेड़ में दूध, काला तिल एवं जल चढ़ाएं। पीपल के पेड़ को पितरों का वास माना जाता है। पितृ स्त्रोत का पाठ करना भी पुण्यकारी होता है।

साभार* भूपेंद्र शर्मा

नवरात्र उत्सव पूरे देश में बिखरें भक्ति-उल्लास के रंग

आस्था, श्रद्धा और भक्ति के पावन पर्व शारदीय नवरात्र आरंभ होते ही हर तरफ उमंग उल्लास का माहौल बन जाता है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक, देश के हर हिस्से में इस महापर्व के अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं। देश में आयोजित होने वाले कुछ प्रसिद्ध शारदीय नवरात्र उत्सव के पारंपरिक-सांस्कृतिक रंगों पर एक दृष्टि।



शारदीय नवरात्र को भारत में त्योहारों का आरंभ भी कहा जाता है। दरअसल, मानसून के बाद 15 दिन के पितृ पक्ष होते हैं, जब कोई भी महत्वपूर्ण और शुभ काम नहीं किया जाता। इसके बाद ही नवरात्र आरंभ होते हैं और नवरात्र के साथ ही त्योहारों की मानो श्रृंखला शुरू हो जाती है। शारदीय नवरात्र के नौ दिन पूरे होने के बाद दसवें दिन असत्य पर सत्य की विजय के प्रतीक के रूप में दशहरा का पर्व मनाया जाता है। इसके बाद करवा



चौथ, धनतेरस, रूप चौदस, छोटी दीवाली, बड़ी दीवाली, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, भाई-दूज, छठ-पूजा, गोपाष्टमी, देवउठनी एकादशी, गुरुनानक जयंती आदि पर्वों-त्योहारों की झड़ी लग जाती है। जहां तक शारदीय नवरात्र की बात है, तो यह पूरे देश को उत्सव के रंग-बिरंगे धागों से बांधने वाला पर्व है। शारदीय नवरात्र में देश में अलग-अलग जगहों पर उत्सव के अलग-अलग रंग देखने को मिलते हैं।

मैसूर का प्रसिद्ध नवरात्र उत्सव

कर्नाटक के मैसूर में दशहरे का दस दिनों तक चलने वाला रंगारंग त्योहार, नवरात्र के पहले दिन से आरंभ होता है और दसवें दिन तक चलता है। यह देश में ही नहीं विदेशों में भी बहुत मशहूर नवरात्र का त्योहार है। विजय नगर के राजाओं ने 14वीं-15वीं शताब्दी में इसे मनाने की शुरुआत की थी। प्रसिद्ध इतालवी यात्री निकोलो डी कॉंटी ने अपने यात्रा वृत्तांत में इसे 'उल्लास का भव्यतम पर्व' कहा था। इस नवरात्र पर्व में मां दुर्गा को योद्धा देवी के रूप में पूजा जाता है। दस दिनों के मैसूर महोत्सव में धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों के अलावा और भी कई तरह के आयोजन किए जाते हैं। देशभर के कई पहलवान जहां अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं, वहीं देश के कोने-कोने से आए गायक, नर्तक अपनी कलाओं का बेहतरीन प्रदर्शन करते हैं। साथ ही इस महोत्सव में शानदार आतिशबाजी, भव्य परेड जैसा बहुत कुछ देखने को मिलता है।

कुल्लू घाटी में सांस्कृतिक उत्सव: नवरात्र के दौरान हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी पूरी तरह से फेस्टिव-मोड में आ जाती है। दस दिनों की श्रृंखला वाले इस त्योहार के दौरान जगह-जगह कई तरह की भाव-भंगिमाओं वाले नृत्य, गायन और पारंपरिक लोकगीतों की प्रस्तुति चलती रहती है। इन दिनों यहां चलने वाली रघुनाथ रथ यात्रा, दर्शकों का मन मोह लेती है। आज के आधुनिक युग में परंपरागत रथों के काफिले के रूप में जब यह यात्रा निकलती है, तो

इसकी छटा देखते ही बनती है। कुल्लू घाटी का नवरात्र उत्सव, पूरी दुनिया में मशहूर है। इस दौरान यहां बड़ी संख्या में विदेशी सैलानी भी आते हैं।

अद्वितीय है बंगाल की दुर्गा पूजा

शारदीय नवरात्र में संपन्न होने वाले सभी तरह के कार्यक्रमों में कोलकाता की दुर्गा पूजा का विशेष महत्व एवं स्थान है। शारदीय नवरात्र में कोलकाता को पूजा और पंडालों के शहर के रूप में जाना जाने लगता है। शारदीय नवरात्र, आरंभ होने से पहले ही यहां देश-दुनिया के कोने-कोने से भक्त और पर्यटक आकर डेरा जमा लेते हैं, ताकि उन्हें कोलकाता के विशेष दुर्गा पूजा महोत्सव में शामिल होने का मौका मिल सके। कोलकाता के दुर्गा पूजा महोत्सव में देश के अलग-अलग हिस्सों में नवरात्र के दौरान में मनाए जाने वाले उत्सवों का सम्मिलित रूप भी देखने को मिलता है।

वाराणसी में गंगा तट का उत्सव

उत्तर प्रदेश में गंगा किनारे बसे भारत के प्राचीन शहर वाराणसी या बनारस में नवरात्र का कुछ अलग ही आकर्षण होता है। इन दिनों वाराणसी घूमने जाने वाले लोग शाम के समय गंगा आरती के साक्षी बनते हैं तो गंगा के उस पार रामनगर में कई दशकों से आयोजित होने वाली ऑर्गेनिक रामकथा के मंचन का भी आनंद लेते हैं। नवरात्र के इस आनंदोत्सव में कर्मकांड, संगीत, गायन और भजन की जो छटा बिखरती है, वो देखने वाली होती है।

बहुत अलग-अनूठी है आदिवासी दुर्गा पूजा



शारदीय नवरात्र में देश भर में भक्तगण दुर्गा पूजा अपनी परंपरा और आस्था के अनुसार मनाते हैं। लेकिन बंगाल और झारखंड के आदिवासी कबीलों द्वारा मनाई जाने वाली दुर्गा पूजा कई मायने में बहुत विशिष्ट होती है। हालांकि दुर्गा पूजा को मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल का प्रमुख त्योहार माना जाता है, लेकिन लगभग पूरे देश में इसे अलग-अलग रूपों में धूमधाम से मनाया जाता है। हर जगह भले ही इसके केंद्र में मां दुर्गा की पूजा-आराधना और अर्चना ही होती है पर देश ही नहीं बंगाल के भी विभिन्न हिस्सों में आंचलिक मान्यताओं के अनुसार कुछ विशेषताएं देखी जाती हैं।

सिंहभूम की कबीलाई दुर्गापूजा: झारखंड राज्य के पूर्वी सिंहभूम जिले के आदिवासी बहुल गांवों में नवरात्र के दौरान दशहरे से पांच दिन पहले आदिवासी पुरुष, महिलाओं का रूप धारण कर उत्सव में भाग लेते हैं। इस समुदाय में शारदीय नवरात्र के दौरान दशहरे से ठीक पहले पांच दिनों तक आदिवासी समुदाय के पुरुष दसाई (दसाय) नृत्य करते हैं। यह कला उनकी समृद्ध आदिवासी संस्कृति का हिस्सा रही है। दसाई नृत्य में भाग लेने वाले पुरुष पहले महिलाओं का भेष धारण करते हैं, फिर पारंपरिक संगीत वाद्य यंत्रों पर नृत्य करते हैं। यह नृत्य वे घर-घर जाकर करते हैं। इस पारंपरिक नृत्य के दौरान सूखे कद्दू से बना एक विशेष प्रकार का वाद्य यंत्र बजाया जाता है, जिसे भुआंग कहते हैं। इसकी ध्वनि बहुत मधुर लगती है। इसके अलावा इस नृत्य में थाली और घंटी का प्रयोग किया जाता है। साथ में मोर पंख को माथे पर सजाकर नृत्य करने वाले आदिवासी बहुत मनमोहक लगते हैं। आदिवासी पुरुषों द्वारा महिलाओं का वेश धारण करने की परंपरा की शुरुआत



वर्षों पहले क्रांतिकारियों को खोजने के लिए हुई थी। दरअसल, जब आक्रमणकारियों ने आदिवासी समुदाय के क्रांतिकारियों को पकड़ लिया और बचे पुरुष आदिवासियों को क्षेत्र से भगा दिया। तब आदिवासी पुरुष, अलग-अलग समूहों में महिला भेष में नाचते हुए क्रांतिकारियों की तलाश में निकलने लगे।

मालदा की आदिवासी दुर्गा पूजा: बांग्लादेश की सीमा पर स्थित पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के आदिवासी इलाकों में प्रमुख है भांगादीची गांव। यह गांव मालदा के हबीबपुर थाने के केंद्रपुर्कुर इलाके में स्थित है। इस गांव की दुर्गा पूजा पश्चिम बंगाल के अन्य हिस्सों में की जाने वाली पारंपरिक पूजा से बिल्कुल अलग होती है। यहां पर जनजातीय भाषाओं में मंत्रों के उच्चारण के साथ मां की पूजा की जाती है। जबकि अन्यत्र संस्कृत मंत्रों का जाप करके मां दुर्गा की पूजा करने का चलन है। इस आदिवासी गांव के लोग बीते 150 वर्षों से श्रद्धापूर्वक दुर्गा पूजा का पर्व मनाते आ रहे

हैं। सदियों पुरानी इस पूजा को लेकर पूरे गांव के लोगों में आज भी भरपूर उत्साह रहता है। यहां करीब 200 आदिवासी परिवार रहते हैं। हालांकि मंदिर बहुत भव्य नहीं है, एक छोटा सा लोहे की चढ़र से बना हुआ घर है। उस कमरे के अंदर मां दुर्गा का मंदिर है। लेकिन इस मंदिर और देवी के प्रति भक्तों की आस्था की जड़ें बहुत गहरी हैं। इस पूजा का एक दिलचस्प इतिहास है। इस पूजा की शुरुआत काफी पहले कबीला प्रमुख लोब हांसदा ने की थी। उनके उत्तराधिकारी बाबूलाल हांसदा बताते हैं कि उनकी पूजा बांग्लादेश में उनके दादाजी के समय में शुरू हुई थी। कभी यह पूजा पारिवारिक होती थी लेकिन अब यह सार्वजनिक आयोजन में तब्दील हो गई है। इस पूजा को लोब हांसदा ने लोकप्रिय बनाया था। मां दुर्गा से स्वप्न में आदेश मिलने के बाद लोब हांसदा ने मां दुर्गा की पूजा शुरू की थी। उस समय लोब हांसदा बांग्लादेश के राजशाही जिले के नचोल थाने के हकरोल गांव में रहते थे। आज भी आदिवासी समुदाय के रीति-रिवाजों का पालन करते हुए धूमधाम से देवी की पूजा की जाती है। आदिवासी समुदाय के लोग यहां पूजा के चार दिनों तक पंगत लगवाकर सामूहिक भोज का आयोजन करते हैं। चारों दिन देवी को शाकाहारी भोजन का भोग लगाया जाता है। नवमी के दिन खिचड़ी का भोग लगाया जाता है। एक ब्राह्मण पुजारी के बजाय, एक बुजुर्ग आदिवासी अपनी विशिष्ट धार्मिक प्रथाओं के अनुसार देवी दुर्गा की पूजा करते हैं। इस पूजा में शामिल होने के लिए पूरे इलाके के लोग आते हैं। पूजा के चार दिनों में आदिवासी समाज के लोग मां की आराधना में लीन रहते हैं।

साभार*: शिखर चंद जैन

मन मोह लेती हैं औली की हसीन वादियां

उत्तराखंड में स्थित औली हिल स्टेशन की सबसे बड़ी खासियत यह है कि गर्मी हो या सर्दी, यह हर मौसम में पर्यटकों से गुलजार रहता है। यहां की खूबसूरत वादियों के दिलकश नजारे हर किसी का मन मोह लेते हैं। कुछ माह पूर्व लेखक ने वहां की यात्रा की और दुर्लभ लेडीज स्लीपर ऑर्किड को भी निहारा। अपनी उस अविस्मरणीय यात्रा अनुभवों को वे साझा कर रहे हैं अपनी जुबानी।



उत्तराखंड राज्य के गढ़वाल हिमालय में 11,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है खूबसूरत हिल स्टेशन? औली। यह ऋषिकेश से लगभग 250 किमी. के फासले पर है। इस छोटे लेकिन कल्पना से अधिक सुंदरता वाले हिल स्टेशन में अधिकतर पर्यटक नवंबर से फरवरी तक आते हैं क्योंकि तब औली बर्फ से ढंका होता है और विंटर स्पोर्ट्स के लिए विख्यात इस जगह पर एडवेंचर का मजा कुछ और ही होता है।

ट्रेकिंग का रोमांचक अनुभव: औली के निकट कुछ बेहतरीन ट्रेक रूट्स भी हैं। इन वजहों से औली उन टूरिस्ट्स का फेवरेट स्पॉट बन जाता है, जिन्हें बर्फ पर ट्रेकिंग करना पसंद होता है। इनमें सबसे मशहूर गर्सन बुग्याल ट्रेक है, जो औली से 3 किमी. की दूरी पर मौजूद है। इस ट्रेक का सबसे शानदार पहलू यह है कि ट्रेकिंग के दौरान ऐसा प्रतीत होता है, जैसे नंदा देवी, कामेट, माना पर्वत और डूनागिरी सब साथ चल रहे हों। हिमालय का जो खूबसूरत नजारा इस ट्रेक रूट पर मिलता है, वह दूसरे ट्रेक रूट्स पर नहीं मिलता, कम से कम मेरा अनुभव तो यही कहता है।

ऋषिकेश से शुरू औली की यात्रा: हालांकि जाड़ों में विंटर स्पोर्ट्स का आनंद लेने के लिए मैं अनेक बार औली गया हूं, लेकिन कभी गर्मियों में जाने का अवसर नहीं मिला था, जबकि मार्च से जून तक औली का मौसम बहुत सुहावना और दिलकश होता है। बीते जून के पहले सप्ताह में जैसे ही मुझे यह सूचना मिली कि इस बार लेडीज स्लिपर ऑर्किड खिली है तो मैंने औली जाने के लिए अपना बैग पैक कर लिया। ऋषिकेश से जोशीमठ के लिए गिनती की ही बसें हैं। इसलिए मैंने बस चलने का समय पहले से ही मालूम कर लिया था। खैर, 5 जून की सुबह जोशीमठ पहुंचने के बाद मुझे औली जाना था, जो कि वहां से लगभग 12 किमी. के फासले पर है।

रोपवे से दिखा अद्भुत नजारा: यात्रा करने के लिए मेरे पास दो विकल्प थे- सड़क या रोपवे। मैंने रोपवे का चयन किया क्योंकि यह एक अलग ही अनुभव है, जिसका आनंद मैं पहले भी ले चुका हूं, लेकिन अच्छे अनुभवों को कुछ अंतराल के बाद दोहराने का मजा ही कुछ और होता है। यह रोपवे भारत में सबसे ऊंचा और लंबा (4 किमी.) है। वेंटिंग लिस्ट अकसर लंबी रहती है, इसलिए मैंने पहले ही बुकिंग करा ली थी। रोपवे का टिकट बस से महंगा पड़ता है, लेकिन तीन दिन तक वैध रहता है। रोपवे के केबिन से नजारा गजब का था, जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है, विशेषकर इसलिए कि जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते हैं, नजारा बदलता रहता है। छोटे कस्बों से देवदार के जंगल और फिर दूर तक फैली हुई बर्फ देखकर आनंद ही आ गया।

दिलकश वादियों ने मोह लिया मन: रोपवे टावर से उतरने के बाद मुझे नंदा देवी ईको रिजॉर्ट (जीएमवीएन) पहुंचने के लिए, दूर तक पैदल चलना पड़ा, जो एक बहुत ही सुंदर जगह पर स्थित है। वहां ठहरने के लिए मैंने पहले से ही ऑनलाइन बुकिंग कराई हुई थी। यह रिजॉर्ट छोटा सा लकड़ी का घर है, लेकिन वहां से औली की दिलकश वादियों और गढ़वाल पर्वत श्रृंखला का अति सुंदर नजारा देखने को मिल रहा था, जिसने थकन के बावजूद मेरे दिल को बाग-बाग कर दिया।

खूबसूरत ऑर्किड का हुआ दीदार: रिजॉर्ट में कुछ देर सुस्ताने, थकान दूर करने और हल्का सा जलपान करने के बाद मैं टहलता हुआ औली की सीमा पर जो जंगल है, वहां पहुंच गया। जंगल में यूं तो तरह-तरह के पेड़, पौधे थे। कई तरह के फूल भी खिले हुए थे, लेकिन मेरी नजरों तो लेडीज स्लिपर ऑर्किड को तलाश रही थीं, जिसे मैंने पहले सिर्फ

तस्वीरों में देखा था। यह पहाड़ी वनों के छाया भरे क्षेत्रों, अल्पाइन घास के मैदानों में 2,500 से 3,800 मी. की ऊंचाई पर खिलता है। चूंकि मुझे जानकारी थी कि यह ऑर्किड किन विशिष्ट परिस्थितियों में खिलता है, इसलिए मैं छांव भरे घास के मैदानों में उसकी तलाश कर रहा था। थोड़ी सी तलाश के बाद ही मेरे सामने लेडीज स्लिपर ऑर्किड के कई फूल थे, सिंडरेला के सुंदर स्लिपर्स की तरह। मैं कुछ देर उन्हें निहारता रहा। ऑर्किड फूलों की कुल संख्या 50 थी। इससे अंदाजा लगा लीजिए कि यह कितना दुर्लभ ऑर्किड है और मैं कितना खुशकिस्मत कि मुझे इसे देखने का अवसर मिला। यह जीवन में एक बार का ही अनुभव हो सकता है क्योंकि इसकी गारंटी नहीं है कि फिर कभी मुझे यह देखने को मिले।

संकटग्रस्त है दुर्लभ ऑर्किड: गौरतलब है कि औली के अलावा ऑर्किड की एक अन्य जमात 2012 में चकराता क्षेत्र के नाग टिब्बा में पाई गई थी। तब से यह लुप्त होने की कगार पर ही है। बहरहाल, ताजे घटनाक्रम में औली में जो ऑर्किड की प्रमुख साइट मिली है, वह इसके संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। अगर इस लुप्तप्राय प्रजाति को बचाए रखना है तो इस साइट की सुरक्षा आवश्यक है। इन दोनों साइट्स के अतिरिक्त ऑर्किड की पॉपुलेशन गाहे-बगाहे इतनी ही ऊंचाई पर पिथौरागढ़ और नैनीताल में भी देखने को मिली है। इस ऑर्किड की उपस्थिति विशिष्ट हिमालय लैंडस्केप तक सीमित है और यह हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, सिक्किम, पाकिस्तान, नेपाल और तिब्बत में भी देखा गया है। औली में जहां ऑर्किड खिले हैं, वह क्षेत्र सड़क के निकट है, जिससे उन पर खतरा अधिक मंडरा रहा है। वन विभाग के अधिकारी इस साइट को सुरक्षित रखने का प्रयास कर रहे हैं।

साभार* समीर चौधरी

कहीं कैंसर न बन जाए कमर दर्द



कमरदर्द को हलके में लेना कई बार कैंसर जैसे घातक रोग को आमंत्रण देना होता है। ऐसे में कमरदर्द को आरंभिक चरणों में ही पकड़ कर इलाज करवाना ही है विकल्प। कमरदर्द गंभीर बीमारियों का एक भयानक संकेत है। पर हम में से कितने कमर और अन्य भागों के दर्द को यह जानते हुए भी गंभीरता से लेते हैं कि यह खतरे की घंटी है और अन्य गंभीर बीमारियों के अलावा कैंसर का भी लक्षण हो सकता है? कैंसर की गिनती आज भी जानलेवा बीमारियों में होती है। यह खून के माध्यम से हड्डियों तक पहुंचता है और सब से आसानी से पीड़ित होती है रीढ़ की हड्डियां। कमर के निचले हिस्से का दर्द भी कैंसर का एक आरंभिक लक्षण हो सकता है। कमरदर्द बहुत तकलीफदेह हो और हमेशा रहता हो तो यह रीढ़ की हड्डी में ट्यूमर का मामला हो सकता है। कुछ कैंसर ऐसे हैं जिन के आरंभिक चरण में उन्हें सामान्य कमरदर्द से अलग करना कठिन होता है। इसलिए इस तरह के दर्द में यह जांच करवा लेने में बुद्धिमानी है कि मामला कैंसर का तो नहीं।

दर्द और कैंसर: कमरदर्द के कई कारण हैं, जैसे गलत मुद्रा में बैठना जिस से मांसपेशियों में दर्द, डिस्क की समस्या, संक्रमण, आघात, और यहां तक कि रीढ़ की हड्डी का ट्यूमर हो सकता है। हालांकि कैंसर, शुरू में कमरदर्द के रूप में सामने आ सकते हैं। रीढ़ की हड्डी में ट्यूमर होने से कमरदर्द इसलिए होता है क्योंकि हड्डी का आकार बड़ा हो जाता है या वर्टीब्रा (रीढ़ का जोड़) में फ्रैक्चर हो जाता है। यह देखा गया है कि ज्ञात या अज्ञात कैंसर के 80 प्रतिशत मरीजों में यह हड्डियों तक फैल जाता है। चौकाने वाली बात यह है कि 36 प्रतिशत

मामलों में तो कोई लक्षण भी नहीं होता। यह सामान्य कमरदर्द के रूप में मौजूद हो सकता है जो कि ऐसे मरीजों में कैंसर का सब से आम लक्षण है। कुछ कैंसर आसानी से रीढ़ की हड्डियों तक फैल सकते हैं, जैसे स्तन कैंसर, फेफड़े का कैंसर, किडनी का कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर, मल्टीपल मायलेमा, लिम्फोमा, पेटआंत के कैंसर और सर्वाइकल कैंसर। चिकित्सक इस प्रकार के दर्द का कारण जानने के लिए आमतौर पर एमआरआई कराते हैं जिस से शरीर संरचना संबंधी विकृतियां ही सामने आती हैं। हालांकि जरूरी है कैंसर की जड़ तक पहुंचना ताकि इलाज की सही योजना बनाई जाए। इस का एक ही रास्ता है। कैंसर का पता लगाने के लिए जांच, जिस से किसी व्यक्ति के शरीर के किसी हिस्से में कैंसर होने का पता चलता है।



लाइलाज नहीं कैंसर

हम में बहुत से लोग यह मान बैठे हैं कि कैंसर लाइलाज है जबकि सच यह है कि समय से बीमारी का पता चले तो इस का इलाज सफल हो सकता है। आमतौर पर विभिन्न प्रयोगशालाओं और संस्थानों में होने वाली संपूर्ण शरीर स्वास्थ्य जांच को जनजन जांच अभियान का रूप दिया गया है जिस का मकसद कम शुल्क पर प्रभावी स्वास्थ्य जांच है और एक बड़ी आबादी को इस का लाभ देने का लक्ष्य रहता है। इन जांचों में बीमारी पकड़ने के लिए सामान्यतया कम सेंसिटिविटी और विवरण होते हैं। भारत में संपूर्ण शरीर स्वास्थ्य जांच के दायरे में आते हैं, फेफड़े का कैंसर, मल में ओकल्ट ब्लड, खून की सूक्ष्मदर्शी जांच, पेशाब की सूक्ष्मदर्शी जांच, पेट का अल्ट्रासाउंड, स्तन की मैमोग्राफी आदि। अल्ट्रासाउंड

आमतौर पर हाल में स्नातक की डिग्री प्राप्त चिकित्सक करते हैं जिन्हें मरीज की हिस्ट्री नहीं पता होती और इसलिए उन्हें कुछ संदिग्ध नहीं लगता। इन जांचों के परिणामों की विश्वसनीयता की अपनी सीमा होती है।

जांच कराएं पता लगाएं

कैंसर का पता लगाने के लिए पूरे शरीर का पीईटी एमआरआई एक बहुत ही विशेषज्ञता की जांच है। एफडीजी आधारित इस जांच में भूखे पेट मरीज के शरीर में रेडियो लेबल ग्लूकोज मोलेक्यूल की सूई दी जाती है। इस से शुरू होती है ग्लूकोज हासिल करने के लिए असामान्य कोशिकाओं की सामान्य कोशिकाओं से प्रतिस्पर्धा। नतीजतन, शरीर में होने वाली असामान्य गतिविधियों का पता चल जाता है जिस की पुष्टि उस हिस्से की व्यापक एमआरआई जांच से कर ली जाती है जिस से, यदि बीमारी हुई तो उस के स्वरूप और फैलाव का पता चल जाता है। किसी गंभीर बीमारी का लक्षण किसी व्यक्ति को महसूस होने या पता लगने वाला संकेत है जो अन्य लोग आसानी से नहीं देख सकते हैं। अगर आप को भी ऐसा ही कोई लक्षण महसूस हो तो नियमित स्वास्थ्य जांच कराएं क्योंकि दर्द को नजर अंदाज करने से स्वास्थ्य की कुछ गंभीर, बल्कि जानलेवा समस्याएं भी हो सकती हैं। यदि दर्द और तकलीफ लंबी अवधि तक परेशान करे तो इसे हलके में न लें और रोकथाम के उपाय अवश्य करें। चिकित्सक से सलाह ले कर रोकथाम के उपाय करें ताकि कोई अनहोनी न हो जाए।

क्यों होता है कमरदर्द

- जब जरूरत से ज्यादा वजन बढ़ता है।
- नियमित अभ्यास की कमी से शरीर की मांसपेशियां अकड़ जाती हैं।
- लंबे अंतराल तक एक ही जगह काम करना।
- आगे की ओर झुक कर चलना या बैठना।
- हाईहील की सैंडल ज्यादा प्रयोग करना।
- डिप्रेसन से भी मांसपेशियों में तनाव आ जाता है। कमरदर्द से कैसे बचें
- स्वस्थ जीवनशैली, पोषक खानपान और कैल्शियम, विटामिन डी की खुराक।
- सही तरीके से शारीरिक मुद्रा में उठनाबैठना।
- मोटापे पर पूरी तरह नियंत्रण।
- पैरों को आराम पहुंचाने वाले फुटवियर, जो बहुत ऊंची हील के न हों, पहनें।
- हैवी ऐक्सरसाइज और भारी सामान को झटके से न उठाएं।
- लगातार या लंबे समय तक बैठें या लेटें नहीं। कमरदर्द के साइड इफैक्ट: किडनी से जुड़े इन्फेक्शन, संक्रमण, स्पाइनल ट्यूमर, बैकबोन में इन्फेक्शन आदि।

हैप्पी लाइफ के लिए जरूरी है सेल्फ केयर

हम दूसरों की केयर तो खूब करते हैं, लेकिन अपने आपको भूले रहते हैं या कहे सेल्फ केयर इग्नोर करते हैं। ऐसा करके हम मेंटली ही नहीं, फिजिकली अपना नुकसान करते हैं, एक तरह से अपनी खुशियां खोते हैं। सेल्फ केयर क्यों जरूरी है, सेल्फ केयर कैसे करें, हम सभी को अपनी हैप्पी लाइफ के लिए यह जरूर जानना चाहिए।

जिंदगी को खुशनुमा बनाने के लिए सेल्फ केयर करना बहुत जरूरी है। जितना हम अपनी केयर पर ध्यान देंगे, उतना ही हमारी जिंदगी सुचारु रूप से चलेगी, हम आने वाली चुनौतियों का सामना आसानी से कर पाएंगे। आमतौर पर लोग सेल्फ केयर के मायने यही समझते हैं- पर्सनालिटी ग्रुपिंग या अट्रैक्टिव लुक। लेकिन असल में यह सेल्फ मेंटेनेंस है, मतलब ऐसी हैबिट्स, जो हमें अच्छा दिखने में सपोर्ट करती हैं। हम इस बात को समझें कि सेल्फ मेंटेनेंस, सेल्फ केयर का एक हिस्सा है, ओवरऑल सेल्फ केयर नहीं।

सेल्फ केयर के सही मायने: सेल्फ केयर एक तरह की सोच है। जिसके तहत हम अपनी केयर करने की जिम्मेदारी को समझते हैं, उसे पूरा करने के लिए भरसक कदम उठाते हैं। डेली रूटीन में ऐसी एक्टिविटीज करते हैं या ऐसी हैबिट्स फॉलो करते हैं, जो हमें हमारा बैटर वर्जन बनाने में मदद करती हैं, जिनसे हमारी हेल्थ इंप्रूव होती है, हम अच्छा महसूस करते हैं और लाइफ को एंजॉय कर पाते हैं। इसलिए जरूरी है कि हम जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गौर करें और अपनी सेल्फ केयर करें।

फिजिकल सेल्फ केयर: अपनी बाँड़ी का ख्याल रखना सबसे जरूरी है। हममें से कई लोग दूसरे द्वारा इग्नोर होने पर या किसी तरह का दुख आने पर अपनी केयर करना बंद कर देते हैं। यह कुछ समय के लिए तो ठीक है, लेकिन लगातार खुद पर ध्यान ना देने पर यह आपकी आदत बन जाती है, इससे कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इससे बचने के लिए कोशिश करें कि चाहे कुछ भी हो जाए, अपनी फिजिकल हेल्थ का ध्यान रखें। रेग्युलर जिमिंग, योगा, एक्सरसाइज करें। अच्छी न्यूट्रिशियस डाइट लें, वर्कआउट करें, जंक फूड अवॉयड करें ताकि आप हेल्दी और फिट रहें।

इमोशनल सेल्फ केयर: अपने इमोशंस का आपको खुद ख्याल रखना होता है। दूसरे आपको कैसे ट्रीट करते हैं, इससे कहीं ज्यादा यह जरूरी है कि आप खुद को कैसे ट्रीट करती हैं। हर समय दुखी और उदास मूड, आपको परेशान रखता है। कई बार आप इससे इरीटेड भी होने लगती हैं। आपका मन पूरी तरह एंजॉय करने को करता है, लेकिन ना चाहते हुए भी आप अपने मन को मारकर पूरा दिन यूँ ही उदासी में बिता देती हैं। अपने इमोशंस को समझें, उन्हें इग्नोर ना करें। बाहर निकलें, घूमें-फिरें। अगर आपको किसी एक्टिविटी का



शौक है तो उसके लिए समय निकालें। ऐसा करने से आप हमेशा खुश रहेंगी।

स्प्रिचुअल सेल्फ केयर: स्प्रिचुअलिटी किसी जाति या धर्म से नहीं जुड़ी होती। हम चाहे हिंदू हों या किसी भी धर्म के हों, हमें नेचर के संपर्क में आने पर सुकून मिलता ही है। जैसे-जब हम किसी सी-बीच पर जाते हैं या पहाड़ी इलाके में या फिर बारिश के मौसम में अपने घर की छत पर चलने वाली हवा के संपर्क में भी काफी सुकून मिलने लगता है। यानी अपनी रूह को खुश रखने के लिए हमें नेचर के संपर्क में आना ही पड़ता है। कोशिश करें कि कहीं घूमने निकल जाएं या फिर किसी ऐसी जगह समय बिताएं, जहां आपको शांत और तनावमुक्त महसूस होता हो। कुल मिलाकर ऐसी हैबिट डेवलप करें या वो स्टेप लें, जो स्प्रिचुअल ग्रोथ में हमें सपोर्ट करती हैं। ऐसी एक्टिविटीज करें, जो आत्मा के विकास से जुड़ी होती हैं। जैसे- माइंडफुलनेस प्रैक्टिस करें, मेडिटेशन करें या रोजाना पूजा-अर्चना करें, धार्मिक यात्रा या तीर्थानंद पर जाएं, धार्मिक गुरुओं के सत्संग में जाएं, धार्मिक किताबें पढ़ें।

इंटलेक्चुअल सेल्फ केयर: मेंटल हेल्थ पर फोकस करने, अपनी नॉलेज बढ़ाने या कुछ नया सीखने के लिए हम किताबें पढ़ें, कोई मनपसंद कोर्स करें, नई स्किल सीखें और नेट पर नई-नई चीजों, जगहों या ज्ञान को एक्सप्लोर करें, ताकि माइंड के होरिजॉन का विस्तार हो और बौद्धिक क्षमता बढ़े। फ्री टाइम में मोटिवेशनल या इंस्पायरिंग वीडियो देखें। इसके पीछे कुछ नया सीखने या नया क्रिएटिव वर्क करने का उद्देश्य रहता है। ये सारी एक्टिविटीज, आपके अंदर एक एनर्जी बनाए रखती हैं, जो आपके दिमाग को बिजी रखती हैं। आपको हमेशा कुछ जानने-सीखने का मौका मिलता है। ये एक्टिविटीज आपके दिमाग को शार्प भी करती हैं।

सोशल सेल्फ केयर: इसमें वो एक्टिविटीज आती हैं, जो हमारी सोशल लाइफ से जुड़ी होती हैं। जिनसे हमारे रिलेशन तो स्ट्रॉन्ग होते ही हैं, उनके साथ अपनी बातें शेयर करके आप रिलैक्स भी होते हैं। जैसे-पैरेंट्स को रोज फोन करना, दोस्तों के साथ घूमना, सोशल गैदरिंग में शरीक होना। लेकिन सोशल लाइफ को अच्छा बनाने और खुद को मजबूत बनाने के लिए उन लोगों से दूरी बनाना भी जरूरी है, जो जीवन में कटुता घोलते हैं।

सेंसरी सेल्फ केयर: हमारी पांच ज्ञानेंद्रियों से हमें देखने, छूने, बोलने, सुनने, सूंघने की क्षमता मिली हुई है। ये सभी फीलिंग्स, हमारे स्ट्रेस लेवल को बढ़ाने और घटाने का काम करती हैं। आप सेंसरी सेल्फ केयर कर सकती हैं जैसे- रात को सोते समय लाइट म्यूजिक सुनना, सुबह उठकर बाहर पार्क में गीली घास पर नंगे पैर चलना।

फाइनेंसियल सेल्फ केयर: फाइनेंसियल केयर से हमारी लाइफ का फाइनेंस एरिया स्ट्रॉन्ग रहता है, इसके लिए हमें कदम उठाने चाहिए, जैसे-बजट बनाकर चलें या फाइनेंस को मैनेज करें, जिससे हमें पता चले कि कहां कितना खर्च करना है? कितना पैसा रिलैक्स होने या मनोरंजन के लिए खर्च करना है, कितना भविष्य के लिए सेविंग करनी है? जब हम इस तरह प्लान करके चलते हैं कि भविष्य के लिए हमारे फाइनेंसियल गोल्स क्या हैं, तो इस तरह के प्लान बनाकर चलना ही हमारी सेल्फ केयर एक्टिविटीज का हिस्सा बन जाते हैं, जो हमारी जिंदगी के फाइनेंसियल एरिया की क्वालिटी को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।

साभार* रजनी अरोड़ा

हेल्थ के लिए हार्मफुल यूरिन प्रेशर को रोकना

हम में से कई लोग अक्सर किसी काम में बिजी होने के कारण तो कभी आलस की वजह से यूरिन प्रेशर महसूस होने के बावजूद उसे पास नहीं करते, उसको रोके रखते हैं। ऐसा अक्सर करना हेल्थ के लिए हार्मफुल हो सकता है, इससे कई गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। इस बारे में डिटेल में जानिए।

बारिश और सर्दी के दिनों में जब बार-बार पेशाब लगती है यानी ब्लैडर पर यूरिन प्रेशर महसूस होता है तो ऐसे में हममें से कई लोग यूरिन पास करने जाने में आलस करते हैं। लंबे समय तक इसे रोक कर रखते हैं। कुछ लोगों में तो ऐसा करने की आदत ही होती है। डॉक्टरों का कहना है कि ना तो कभी पेशाब के वेग को रोकना चाहिए और ना ही पेशाब लगे तो करने में देर करना चाहिए वरना इससे कई तरह की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं।

हो सकती हैं कई प्रॉब्लम्स

- ▶ इसके कारण मूत्राशय में खिंचाव बढ़ जाता है।
- ▶ गुर्दों में पथरी बनने लगती है।
- ▶ मूत्रपथ का संक्रमण यानी यूटीआई हो सकता है।
- ▶ इससे शरीर में बैक्टीरिया के पनपने की आशंका बढ़ जाती है। बारिश के दिनों में ऐसा सबसे ज्यादा होता है, क्योंकि इन दिनों बैक्टीरिया का संक्रमण बहुत जल्दी होता है।
- ▶ अगर बारिश के दिनों में बार-बार पेशाब रोकी जाए तो इससे पेशाब के साथ खून आने की भी समस्या पैदा हो सकती है।

किडनी पर पड़ता है बुरा असर

अगर आप यह दिखाने के लिए यूरिन प्रेशर रोकते हैं कि आपमें इसे लंबे समय तक रोकने की क्षमता है, तो यह ताकत ना दिखाएँ। इससे गंभीर समस्याएं पैदा हो सकती हैं। लंबे समय तक पेशाब रोकने से मूत्राशय में खिंचाव आ जाता है और कई बार यह फैल जाता है। इससे शरीर की समूची व्यवस्था में परेशानी हो सकती है और आप एक नहीं कई तरह की समस्याओं से घिर सकते हैं। किसी भी मौसम में पेशाब रोकना, किडनी को नुकसान पहुंचाना है, क्योंकि पेशाब रोकने से गुर्दों पर भारी दबाव पड़ता है और इससे उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है। लंबे समय तक पेशाब रोकने से किडनी से जुड़ी गंभीर बीमारियां भी हो सकती हैं। कभी-कभार किसी आपत्ति-विपत्ति में पड़ गए हों और पेशाब रोकना बहुत मजबूरी हो तो एकाध बार ऐसा कर सकते हैं। लेकिन नियमित रूप से पेशाब रोकना, इसे अपनी शारीरिक क्षमता का जरिया बना देना सही नहीं है। इससे शरीर में अपने ही पेशाब से संक्रमण बढ़ने की आशंका रहती है। पेशाब के रास्ते में जलन पैदा हो जाती है और फिर बार-बार पेशाब आती है। यानी यूरिन फ्लो के प्रेशर को



रोकना कई तरह की परेशानियां पैदा कर सकता है।

ये भी हो सकती हैं समस्याएं

पेशाब वास्तव में शरीर से फिल्टर किया गया गंदा पानी होता है, इसे जितना जल्दी हो शरीर से बाहर कर देना चाहिए। अगर देर तक हम पेशाब को रोककर रखते हैं तो यह शरीर को ही नुकसान पहुंचाने लगता है। इससे हमारे शरीर का फिल्टर प्रोसेस खराब हो जाता है और किडनी से जुड़ी समस्याएं पैदा हो जाती हैं। कुछ लोग आदतन बिना किसी वजह से भी देर तक पेशाब रोके रखते हैं। ऐसा करने से पीठ, पेट के निचले हिस्से और पसलियों में दर्द होने लगता है। ज्यादा देर तक पेशाब रोकने से मूत्राशय की दीवारें कमजोर हो जाती हैं, जिससे ब्लैडर के खराब होने का खतरा बढ़ जाता है। चूंकि पेशाब में यूरिक एसिड और कैल्शियम ऑक्सलेट नामक मिनरल मौजूद होते हैं, इसलिए जब कोई व्यक्ति देर तक अपनी पेशाब रोककर रखता है तो ये दोनों चीजें मिलकर किडनी स्टोन बना देती हैं। इसलिए पेशाब जब भी लगे उसे जल्द पास आउट कर लें।

जब बार-बार महसूस हो यूरिन प्रेशर

कुछ लोगों को जल्दी-जल्दी पेशाब करने जाना पड़ता है। अगर यह सामान्य दिनों से ज्यादा है, तो आपको सजग होना चाहिए और किसी यूरोलॉजिस्ट से कंसल्ट करना चाहिए, ताकि यह पता चल सके कि आखिर बार-बार पेशाब क्यों आ रहा है? हालांकि बढ़ती उम्र में यानी 55-60 साल के बाद चाहे महिलाएं हों या पुरुष, उनको जल्दी-जल्दी पेशाब आने लगता है। यह सिर्फ उनकी शारीरिक समस्या की वजह से नहीं होता, कई बार इसकी वजह बिगड़ता पर्यावरण भी हो सकता है। बार-बार पेशाब आने के अनगिनत कारण हैं और हर

कारण का रिश्ता कहीं न कहीं शरीर के स्वास्थ्य से है। इसलिए जैसे ही पेशाब संबंधी कोई समस्या महसूस हो, तुरंत डॉक्टर से मिलना चाहिए। इसकी अनदेखी इसे बढ़ा बना सकती है। जिन सीनियर लोगों को बारिश और जाड़े के दिनों में दिनभर में 10 से 15 बार पेशाब करने जाना पड़ता है, तो यह उनके अंदर तेजी से पनप रही किसी बीमारी का लक्षण हो सकता है।

नहीं रोकना चाहिए यूरिन प्रेशर

यूरिन प्रेशर रोकने के नुकसान के बारे में सीनियर कंसल्टेंट-यूरोलॉजी एंड रीनल ट्रांसप्लांट डॉक्टर कहते हैं, 'आजकल काम की व्यस्तता और भाग-दौड़ के चलते लोगों की यूरिन को लंबे समय तक रोकने की आदत शरीर पर गंभीर दुष्प्रभाव डाल सकती है। नियमित रूप से यूरिन रोकने से मूत्राशय की मांसपेशियां कमजोर हो सकती हैं, जिससे मूत्राशय की कार्यक्षमता प्रभावित होती है। इससे आपको बार-बार पेशाब आने की समस्या हो सकती है या मूत्राशय में संक्रमण (यूटीआई) का खतरा बढ़ सकता है। इससे किडनी पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। मूत्राशय में लंबे समय तक पेशाब रोकने से किडनी में बैक्टीरिया के संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है। इसके अलावा, पेशाब रोकने से मूत्र में हार्मफुल एलिमेंट्स का जमाव भी बढ़ सकता है, जिससे पथरी बनने की संभावना भी बढ़ जाती है। इसलिए आवश्यक है कि आप यूरिन को लंबे समय तक ना रोके और नियमित रूप से मूत्राशय को खाली करें। यह ना केवल यूरिन सिस्टम को स्वस्थ रखता है, बल्कि शरीर के कंप्लीट हेल्थ के लिए भी लाभकारी होता है। यूरिन से जुड़ी कोई भी समस्या महसूस हो तो लापरवाही ना बरतें और तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।'

डांडिया-गरबा इवेंट में हर दिन पाएं नया लुक



शारदीय नवरात्र में होने वाले गरबा-डांडिया इवेंट में शामिल होने को लेकर महिलाओं में बहुत क्रेज होता है। आप भी इसकी तैयारी में जुटी होंगी। अगर आप चाहती हैं कि हर रोज आप नए इसअप लुक में नजर आए तो फॉलो कर सकती हैं, यहां दिए जा रहे यूजफुल सजेरांस।

नवरात्र के अवसर पर देवी मां की स्तुति के लिए सोसाइटीज और क्लबज में गरबा और डांडिया नाइट्स का आयोजन किया जाता है। गरबा रास पूरे नौ दिनों तक चलता है, जिसमें युवतियां और महिलाएं हर दिन नए लुक के साथ डांडिया और गरबा खेलने जाना चाहती हैं। आपकी इस चाहत को पूरा करने में हेल्प के लिए हम आपको बता रहे हैं, नौ दिनों के लिए फेस्टिव एथनिक आउटफिट्स के आइडियाज, जिन्हें फॉलो कर आप हर दिन लगेगी सबसे अलग-आकर्षक।

डिजाइनर प्लाजो सूट : नवरात्र के पहले दिन



डिजाइनर प्लाजो सूट पहनकर डिफरेंट लुक पाया जा सकता है। यह एक ऐसा ऑप्शन है, जो स्टाइल के साथ-साथ कंफर्ट भी देता है। इसे पहन कर आप आसानी से गरबा और डांडिया खेल सकती हैं।

लहंगा-चोली : नवरात्र के दिनों में गरबा करने के दौरान लहंगा-चोली बहुत अच्छा ड्रेस ऑप्शन माना जाता है। ऐसे में आप चाहें तो दूसरे दिन इस लुक को कैरी कर सकती हैं। मैचिंग लहंगा, ब्लाउज और दुपट्टा

के अलावा कांटास्ट लहंगा-चोली का लुक भी ट्राई किया जा सकता है।

लॉन्ग एथनिक कुर्ती-जींस : गरबा-डांडिया के दौरान लॉन्ग एथनिक कुर्ती के साथ जींस का कॉम्बो, आपको ट्रेंडी लुक देता है। नवरात्र के तीसरे और चौथे दिन इस लुक को कैरी करें। जींस के साथ रेड, पंक, ऑरेंज और यलो जैसे ब्राइट कलर की लॉन्ग कुर्ती और उस पर गुजराती जैकेट में आप अमेजिंग लगेंगी।

लॉन्ग स्कर्ट-टॉप के साथ श्रग : नवरात्र के गरबा-डांडिया इवेंट में खूबसूरत दिखने के लिए पांचवें दिन आप लॉन्ग स्कर्ट, क्रॉप टॉप और उसके ऊपर कलरफुल श्रग को स्टाइल कर सकती हैं। एक मल्टीकलर स्कर्ट के साथ प्लेन क्रॉप टॉप, टी-शर्ट को पहनकर भी आप यूनीक दिख सकती हैं। फंकी ज्वेलरी या पॉम-पॉम ज्वेलरी और नेट के लाइट या कलरफुल दुपट्टे के साथ लुक को कंप्लीट किया जा सकता है। इस लुक में आप डिफरेंट नजर आएंगी।

धोती-पैट्स और शॉर्ट कुर्ती : नवरात्र के छठे



दिन नए लुक के लिए कंफर्टेबल धोती-पैट्स को शॉर्ट



कुर्ती के साथ पेयर करें। साथ में ट्रेडिशनल ज्वेलरी और मौजड़ी पहन कर लुक को परफेक्ट बनाया जा सकता है। वैसे आपके लिए शरारा और गरारा भी एक बेहतरीन ड्रेस हो सकती है। आजकल इसकी कई वैराइटीज ट्रेंड में हैं। यह एथनिक ड्रेसेस कैरी करने में बहुत आसान होती हैं।

ट्रेडिशनल राजस्थानी

गुजराती लहंगा-चोली : नवरात्र के सातवें-आठवें दिन राजस्थानी या गुजराती स्टाइल की पारंपरिक लहंगा-चोली के साथ ट्रेडिशनल ज्वेलरी जैसे-चूडया, ईयर रिंग्स कैरी कर सकती हैं। इनके साथ जूतियां कैरी करके लुक को परफेक्ट बना सकती हैं।

ग्रेसफुल साड़ी : साड़ी, इंडियन आउटफिट्स का वह प्यारा, एलिगेंट अटायर है, जो हर महिला पर जंचता है। नौवें दिन आप साड़ी पहनकर डांडिया नाइट को एंज्वाय कर सकती हैं। साड़ी को सीधे पल्लू में ड्रेप करके लुक को और ज्यादा खूबसूरत दिखाया जा सकता है। इसमें कंफर्टेबल फील करने के साथ स्टाइलिश दिखने के लिए कमरबंद या बेल्ट लगा सकती हैं। इससे आपका लुक और निखर उठेगा।

साभार* ललिता गोयल

बच्चों को भी हो सकता है हार्ट अटैक

सामान्य तौर पर हार्ट अटैक की समस्या मिड एज और ओल्ड एज के लोगों में देखी जाती है। लेकिन अब यंग, टीनाएज ही नहीं बच्चों में भी हार्ट अटैक के केसेस सामने आने लगे हैं। ऐसे में सभी पैरेंट्स के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि वो कौन सी कंडीशंस हैं, जो बच्चे को हार्ट पेरेण्ट बनाती हैं? इसके शुरुआती लक्षण क्या हैं और इनसे बचाव कैसे किया जा सकता है?

पिछले दिनों अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) में रहने वाली 8 वर्षीया दीक्षा और 14 वर्षीय मोहित की खबर चर्चा में रही। हैरानी की बात यह थी कि उनकी किसी तरह की मेडिकल हिस्ट्री नहीं थी, फिर भी खेलते-खेलते सडन कार्डियक अरेस्ट होने से उनकी मौत हो गई। गौर करें तो बीते दशक में हार्ट अटैक से मरने वाले की फेहरिस्त में कम उम्र के कई मासूम शामिल हैं। खेलने-कूदने की उम्र में मासूम बच्चों का ऐसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त होना दुखदायी और चिंताजनक है। इसके प्रति पैरेंट्स को सजग होने की जरूरत है।

क्या हैं कारण

- ▶ पैदाइशी हार्ट की बनावट खराब होना, हार्ट ब्लॉक होना।
- ▶ ब्लड प्रेशर, ब्लड में कोलेस्ट्रॉल, ट्राइग्लिसराइड लेवल ज्यादा होना, मोटापा जैसी समस्याओं की फैमिली हिस्ट्री होना।
- ▶ जन्म से हार्ट की मसल्स कमजोर होना या हार्ट को ब्लड सप्लाई करने वाली नस का उल्टा जुड़ा होना।
- ▶ बच्चे को किसी बीमारी जैसे बुखार के बाद नसों में सूजन आना जिसे कावासाकी डिजीज कहा जाता है।
- ▶ हार्ट मसल्स में कैल्शियम, विटामिन डी, किसी एंजाइम की कमी होना।
- ▶ मेटाबोलिक गड़बड़ी के कारण बच्चों का हार्ट पंपिंग कम होती है, जिससे शरीर के किसी भी हिस्से में ब्लड क्लॉट हो सकता है, जो धीरे-धीरे हार्ट आर्टरीज तक पहुंच जाता है, जो हार्ट अटैक का कारण बनता है।
- ▶ हाइपरट्रोफिक कार्डियोमायोपैथी की समस्या होना, जिसमें हार्ट की मसल्स मोटी और बढ़ जाती हैं, जिससे हार्ट को पंप करने में परेशानी होती है।
- ▶ घर में संतुलित पौष्टिक खाने के बजाय जंक और प्रोसेस्ड फूड ज्यादा सेवन करना।
- ▶ लॉन्ग क्यूटी सिंड्रोम होना, जिसमें हार्टबीट को कंट्रोल करने वाले इलेक्ट्रिकल सिस्टम में विकार होने से सांस लेने में दिक्कत होना।
- ▶ खराब लाइफस्टाइल, सोने-जागने, खाने-पीने का समय नियत ना होना।
- ▶ बच्चे का मोबाइल, टीवी स्क्रीन टाइम में ज्यादा समय बिताना, देर रात तक स्क्रीन देखते रहना।
- ▶ फिजिकल एक्टिविटी कम करना। पढ़ाई का पियर



प्रेसर होना।

हार्ट प्रॉब्लम्स के लक्षण

अगर बच्चे में ये लक्षण दिखें तो पैरेंट्स को फौरन मेडिकल मदद लेनी चाहिए, ताकि समय पर टेस्ट और डायग्नोसिस हो सके।

- ▶ कमजोर होना या विकास ठीक से ना होना।
- ▶ चिड़चिड़ा होना या ज्यादा रोना।
- ▶ जल्दी थक जाना या कमजोरी महसूस करना।
- ▶ बिना वजह पसीना ज्यादा आना।
- ▶ सांस फूलना या जोर-जोर से सांस लेना। हाथ-पैर ठंडे होना।
- ▶ त्वचा का पर्पल या फिर ग्रे-ब्लू का होना जैसे होंठों, म्यूकस मेंब्रेन और नाखूनों का रंग बदलना।
- ▶ दिल की धड़कन तेज होना, घबराहट होना, चक्कर आना या बेहोश होना।
- ▶ खून की कमी होना। छाती-हाथ या पेट में दर्द होना।

पैरेंट्स रखें ध्यान

हालांकि बच्चों में हार्ट अटैक के मामले बहुत कम ही होते हैं, फिर भी पैरेंट्स को सतर्क रहना चाहिए। प्रेग्नेंसी के दौरान मां के लिए जरूरी है कि बुखार या किसी भी तरह के इन्फेक्शन होने से यथासंभव बचाव करें। डॉक्टर को कंसल्ट किए बिना किसी तरह की दवाई नहीं लें। साथ ही स्मोकिंग या एल्कोहल का सेवन ना करें। जन्मोपरांत बच्चे की हार्ट-स्क्रीनिंग जरूर करवाएं। ईको कार्डियोग्राफी या हार्ट का अल्ट्रासाउंड से हार्ट की बनावट, हार्ट फंक्शन या अन्य समस्याओं का

पता चल जाता है। बच्चों को बचपन से ही घर में बना पौष्टिक और संतुलित आहार खाने की आदत डालें। प्रत्येक मील में हर फूड-ग्रुप यानी फाइबर, प्रोटीन, विटामिन-मिनरल से भरपूर चीजें शामिल करें। फल-सब्जियां, दालें, दूध और दूध से बने पदार्थ ज्यादा से ज्यादा खाने के लिए दें। ऑयली खाना कम दें, क्योंकि इससे बेवजह वजन बढ़ने का खतरा रहता है। हाइड्रेशन का ध्यान रखें। दिन में कम से कम 4-5 गिलास पानी या घर में बनाए कम चीनी वाले पेय पीने को दें। डब्ल्यूएचओ के अनुसार बच्चे को रोजाना 15-20 ग्राम या 3 चम्मच से अधिक चीनी देना नुकसानदायक है। टॉफी-चॉकलेट जैसी रिफाइन चीनी से बनी चीजें, कोल्ड ड्रिंक्स, शेक, जूस जैसी चीजें भी यथासंभव कम दें। जहां तक हो सके जंक फूड खाने के लिए ना दें।

इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स पर घंटों रील्स या मीम्स देखने, गेम्स खेलने या प्रोग्राम देखने के बजाय बच्चों को आउटडोर गेम्स खेलने, हॉबीज के अनुरूप काम करने या दूसरी एक्टिविटीज करने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे बच्चा ना सिर्फ स्क्रीन एडिक्शन से दूर होगा, बल्कि एक्टिव रहेगा और बीमारियों की चपेट में आने से बचेगा। अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन का मानना है कि हर बच्चे को कम से कम 3-4 घंटे एक्टिव रहना जरूरी है। फिजिकल एक्टिविटीज करने पर उसके दिल की कसरत होगी और वो स्वस्थ रहेगा। बच्चों को स्ट्रेस मैनेजमेंट तकनीक जरूर सिखाएं, तभी वो आगे चलकर हाइपर मूड वाले नहीं बनेंगे और स्वस्थ रहेंगे। उनके साथ क्वॉलिटी टाइम बिताएं। बचपन से ही सर्कैडियम रिदम के हिसाब से दिनचर्या को फॉलो करना सिखाना चाहिए। खासकर नियत समय पर सोने-जागने, खाने-पीने का रूटीन सेट होना चाहिए। उनके लिए रात को कम से कम 8 घंटे की नींद लेना जरूरी है। 3 साल की उम्र से ही ब्लड प्रेशर समय-समय पर चेक करवाएं ताकि बच्चे में हाइपरटेंशन जैसी समस्या पकड़ में आ सके और उसका समुचित उपचार किया जा सके।

मोटापे के शिकार बच्चों में लिपिड प्रोफाइल, थायरॉयड, ब्लड शुगर का टेस्ट समय-समय पर जरूर करवाएं। इससे बच्चे में हार्ट संबंधी समस्या का पहले पता चल सकता है और यथासमय उपचार किया जा सकता है। *

प्रस्तुति: रजनी अरोड़ा

डिलीशियस-फ्रूटी नो कुक स्वीट्स

इन दिनों त्यौहारी सीजन चल रहा है। ऐसे में आप घर आने वाले मेहमानों का स्वागत स्वीट डिशेज से जरूर करना चाहेंगी। आप चाहें तो घर पर ही फ्रूट्स और ड्राय फ्रूट्स से तैयार होने वाली स्वीट डिशेज बना सकती हैं। इस बार हम आपको ऐसी ही स्वीट डिशेज की रेसिपी बता रहे हैं, जिन्हें आप झटपट बना सकती हैं, क्योंकि इन्हें कुक करने की भी जरूरत नहीं है।

पाइनएप्पल बर्फी



सामग्री: कोकोनट पावडर-200 ग्राम, मोतीचूर के लड्डू-250 ग्राम, कंडेस्ड मिल्क-100 ग्राम, ऑरेंज एसेंस-8 बूंदें, खाने वाला ऑरेंज कलर-1 चुटकी, कटे बादाम-100 ग्राम, कटे काजू-100 ग्राम, पिस्ता चूरा-25 ग्राम, लाल-हरी पेठा चेरी-थोड़ी-सी, इलायची पावडर-5 ग्राम

विधि: मोतीचूर के लड्डूओं को फोड़कर चूरा कर लें। 50 ग्राम कोकोनट पावडर और पेठा चेरी को छोड़ कर बाकी सारी सामग्री किसी बड़े बर्तन में डाल कर अच्छी तरह मिला लें। एक-एक कड़छी मिश्रण की लेकर लड्डू बना लें। इन पर कोकोनट पावडर लपेटें और पेठा चेरी रखकर सर्व करें।

नारियल पेड़े



सामग्री: नारियल पावडर-200 ग्राम, कंडेस्ड मिल्क-आवश्यकतानुसार, वनिला एसेंस-कुछ बूंदें, दो टुकड़ों में कटे बादाम-1/4 कप, बारीक कटी पेठा चेरी-2 बड़े चम्मच, पिस्ता चूरा-1 बड़ा चम्मच, चिरौजी-1 बड़ा चम्मच

विधि: नारियल पावडर में आवश्यकतानुसार कंडेस्ड मिल्क मिलाकर गूथें और सॉफ्ट डो जैसा बना लें। ध्यान रहे कि कंडेस्ड मिल्क कम या ज्यादा न हो। इसमें वनिला एसेंस मिला लें। अब इस मिश्रण के 2-2 बड़े चम्मच लेकर बॉल्स बना लें। प्रत्येक बॉल

के ऊपर आधा बादाम, बारीक कटी पेठा चेरी, पिस्ता चूरा और चिरौजी रख कर हथेली से दबाएं और पेड़े बना कर सर्व करें।

ट्रिपल फ्लेअर फ्रूट शॉट्स



सामग्री: पके पपीते के छोटे-छोटे टुकड़े-आधा कप, कीवी के छोटे-छोटे टुकड़े-आधा कप, आम के छोटे-छोटे टुकड़े-आधा कप, मिल्क पावडर-3 छोटे चम्मच, पिसी चीनी-3 बड़े चम्मच, कटा पिस्ता-1 छोटा चम्मच, कुटी बर्फ-6 बड़े चम्मच

विधि: पपीते के टुकड़े, 1 छोटा चम्मच मिल्क पावडर, 1 बड़ा चम्मच पिसी चीनी और 2 बड़े चम्मच कुटी बर्फ मिक्सी में डालकर अच्छी तरह ब्लेंड कर लें। इसी प्रकार कीवी और आम के टुकड़ों का मिश्रण बना लें। अब ग्लासेज में एक तिहाई तक पपीते का मिश्रण डालें। इसके ऊपर चम्मच की सहायता से कीवी का मिश्रण ग्लास की साइड के साथ-साथ डालकर, दो तिहाई तक भर लें। इसी तरह इसके ऊपर आम का मिश्रण डालें और कटा पिस्ता बुरक कर ठंडे-ठंडे ट्रिपल फ्लेअर फ्रूट शॉट्स को सर्व करें।

ऑरेंज कोकोनट लड्डू



सामग्री: कोकोनट पावडर-200 ग्राम, मोतीचूर के लड्डू-250 ग्राम, कंडेस्ड मिल्क-100 ग्राम, ऑरेंज एसेंस-8 बूंदें, खाने वाला ऑरेंज कलर-1 चुटकी, कटे बादाम-100 ग्राम, कटे काजू-100 ग्राम, पिस्ता चूरा-25 ग्राम, लाल-हरी पेठा चेरी-थोड़ी-

सी, इलायची पावडर-5 ग्राम

विधि: मोतीचूर के लड्डूओं को फोड़कर चूरा कर लें। 50 ग्राम कोकोनट पावडर और पेठा चेरी को छोड़ कर बाकी सारी सामग्री किसी बड़े बर्तन में डाल कर अच्छी तरह मिला लें। एक-एक कड़छी मिश्रण की लेकर लड्डू बना लें। इन पर कोकोनट पावडर लपेटें और पेठा चेरी रखकर सर्व करें।

बनाना क्रीम



सामग्री: पके केले-6, फुल क्रीम मिल्क-1 कप, पिसी चीनी-100 ग्राम, लाल पेठा चेरी-1 छोटा चम्मच, कटा पिस्ता-1 बड़ा चम्मच

विधि: सबसे पहले केलों को छील कर उनके छोटे-छोटे टुकड़े करके चार-पांच घंटों के लिए फ्रीजर में रख दें। फिर इन टुकड़ों को दूध और चीनी के साथ मिक्सी में डाल कर अच्छी तरह ब्लेंड करें। सर्विंग बाउल में डालें और कटा पिस्ता और पेठा चेरी से गार्निश कर सर्व करें।

फ्रूटी वनिला

सामग्री: वनिला आइसक्रीम-4 कप, अनानास, आम, अंगूर, केला और पपीता जैसे फल-मनचाही मात्रा में, बारीक कटा बादाम-1 बड़ा चम्मच, कटा पिस्ता-1 बड़ा चम्मच, इलायची पावडर-1 छोटा चम्मच

विधि: सभी फलों को छीलकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर फ्रिज में रख दें। वनिला आइसक्रीम को फ्रिज से निकालकर थोड़ी देर के लिए कमरे के तापमान पर रख लें। फिर उसे अच्छी तरह फेंट लें। इसमें सभी कटे हुए फल और इलायची पावडर मिलाएं और कटा बादाम, पिस्ता बुरक कर फ्रिज में रख दें। जब खाना हो, तब ठंडी-ठंडी फ्रूटी वनिला, बाउल में डालकर सर्व करें।

साधार* ओम प्रकाश गुप्ता

मासिक
राजपूत दर्पण

संपादकीय कार्यालय: एम-2, 159 जोन-2, महाराणा प्रताप नगर

भोपाल - 462011 (म.प्र.) 📞 नं.- 917 908 1582

Email-rajputdarpan.bpl@gmail.com

वैवाहिक विवरण

नाम.....
माता/पिता का नाम
जन्म तारीख..... जन्म स्थान..... जन्म समय.....
कद/ ऊंचाई..... रंग कुंडली मांगलिक है अथवा नहीं
शैक्षणिक योग्यता अन्य योग्यता
गोत्र मामा का गोत्र / सरनेम
मूल निवास
वर्तमान निवास
व्यवसाय / पेशा वेतन
परिवारिक विवरण
.....
.....
उपरोक्त दी गई जानकारी / विवरण मेरे निजी ज्ञान एवं विश्वास से पूर्णतः सत्य है।

हस्ताक्षर

पालक / अभिभावक

निवेदक:-

कृपया वैवाहिक विवरण, फोटो राजपूत दर्पण की
ई-मेल rajputdarpan.bpl@gmail.com
(सॉफ्ट कॉपी) पर भेजने का कष्ट करें।

नाम
पता.....
.....
फोन/ मो. नं
स्थान दिनांक.....

नाम.....माता/पिता का नाम.....निवासी.....
से सदस्यता शुल्क की रू.....मात्र रसीद संख्या..... दिनांक.....

निवेदन

वैवाहिक विवरण का प्रकाशन कराने हेतु मासिक राजपूत दर्पण पत्रिका की सदस्यता लेना अनिवार्य है। कृपया वैवाहिक संबंध तय करने से पूर्व तथ्यों को व्यक्तिगत रूप से मली-मांति जांच पड़ताल कर लें, इसके बाद ही वैवाहिक संबंध तय करें। वैवाहिक संबंध तय होने की स्थिति में मासिक राजपूत दर्पण कार्यालय को सूचित करें, जिससे हम वैवाहिक सूची से उनका वैवाहिक विवरण हटा सके। जिन लोगों से मासिक राजपूत दर्पण कार्यालय द्वारा दूरभाष पर संपर्क किया गया, उनसे संपर्क न होने की स्थिति में या मोबाइल स्वीच ऑफ, नंबर गलत होना व उनके द्वारा संतोषजनक उत्तर न देने पर उनके वैवाहिक विवरण पत्रिका में नहीं छापे गए हैं। वैवाहिक विवरण को पुनः प्रकाशित करवाने हेतु मासिक राजपूत दर्पण पत्रिका के कार्यालय में संपर्क करने का कष्ट करें। मासिक राजपूत दर्पण की प्रति अपने नातेदार व रिश्तेदारों को भी वितरित करें, जिससे अधिक से अधिक समाज के लोग इसका लाभ ले सकें एवं समाज की विवाह समस्या के निदान में हम आपके सहयोगी बन सकें। -संपादक

चौहान

दीपिका सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 11/11/1996
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	: 11.30 pm
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.3 फीट
वर्ण/ रंग	: मीडियम
गोस्त्र (स्वयं)	: सोनक
गोस्त्र (मामा)	: खापाड़िया
शिक्षा	: GNM (नर्सिंग)
व्यवसाय/नौकरी	:
आय	:
पिता का नाम	: श्री विजय सिंह चौहान
वर्तमान पता	: गणेश नगर, नरियलखेड़ा भोपाल, MP
संपर्क सूत्र	: 9340803336
पंजीन दिनांक	: (जून 2027 तक)



चौहान

मंजू चौहान

जन्मतिथि	: 23/01/1985
जन्म स्थान	: इटारसी
जन्म समय	: 10:35 PM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.6 इंच
वर्ण	: गेहूँआ
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: कौशला
शिक्षा	: M.com
व्यवसाय/नौकरी	:
आय	:
पिता का नाम	: श्री कैलाशचन्द्र चौहान
वर्तमान पता	: 4 सनिया कालोनी बैरागढ़, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9617290708
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चौहान

माया चौहान

जन्मतिथि	: 29/10/1986
जन्म स्थान	: रतलाम
जन्म समय	: 12:56 AM
मांगलिक	: हाँ
ऊंचाई	: 5 इंच
वर्ण	: गेहूँआ
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: कैशला
शिक्षा	: M.com
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 3 लाख साल
पिता का नाम	: श्री कैलाशचन्द्र चौहान
वर्तमान पता	: 4 सनिया कालोनी बैरागढ़, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9617290708
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चौहान

कंचन सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 01/01/986
जन्म स्थान	: गाजीपुर (उप्र)
जन्म समय	: 5:00 pm
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.2
वर्ण	: गेहूँआ
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: गार्ण
शिक्षा	: MSC, LLB
व्यवसाय/नौकरी	: एडवोकेट
मासिक आय	: 20,000
पिता का नाम	: श्री कालिका सिंह चौहान
वर्तमान पता	: 178 युगांतर कॉलोनी अवधपुरी, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9131771219
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चौहान

डॉ. अचला चौहान

जन्मतिथि	: 14/02/1998
जन्म स्थान	: बैतूल
जन्म समय	:
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.4
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	: चौहान
गोस्त्र (मामा)	: राठौर
शिक्षा	: मेयुरापेयी यौगिक साइंस
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 30,000
पिता का नाम	: श्री धनसिंह
वर्तमान पता	: H-88/97 तुलसी नगर भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9826309018
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चौहान

प्रतिमा चौहान

जन्मतिथि	: 07/01/1991
जन्म स्थान	:
जन्म समय	:
मांगलिक	:
ऊंचाई	: 5.3 इंच
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	:
गोस्त्र (मामा)	:
शिक्षा	: MSC
व्यवसाय/नौकरी	:
आय	:
पिता का नाम	: श्री आर.एस. चौहान
वर्तमान पता	: 80 फीट रोड अशोका गार्डन, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9752055116, 9424400119
पंजीन दिनांक	: (फरवरी 2026 तक)



सिंह

राजप्रिया सिंह

जन्मतिथि : 15/12/2001
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 5.28 PM
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.4 इंच
वर्ण : फेयर
गोस्त्र (स्वयं) : गेहलोत
गोस्त्र (मामा) : कश्यप
शिक्षा : BA
व्यवसाय/नौकरी :
मासिक आय :
पिता का नाम : श्री रामप्रकाश सिंह
वर्तमान पता : एमआईजी, रामेश्वरम
बागमुगलिया, भोपाल
संपर्क सूत्र : 8839158926
पंजीन दिनांक : (मई 2027 तक)



सिंह

कंचन सिंह

जन्मतिथि : 02/04/1990
जन्म स्थान : उप्र
जन्म समय : 6-10 PM
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.3 इंच
वर्ण : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) :
गोस्त्र (मामा) : बिसेन
शिक्षा : B.com
व्यवसाय/नौकरी :
मासिक आय :
पिता का नाम : श्री रमाशंकर सिंह
वर्तमान पता : जवाहर चौक
भोपाल
संपर्क सूत्र : 9300412875
पंजीन दिनांक : (जनवरी 2026 तक)



सिंह

अकांक्षा सिंह

जन्मतिथि : 05/07/2000
जन्म स्थान : छपरा
जन्म समय : 1.20 pm
मांगलिक :
ऊँचाई : 5.1 फीट
वर्ण : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : चंद्रयान
गोस्त्र (मामा) : वशिष्ठ
शिक्षा : Chartered Accountant
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 14 pla
पिता का नाम : श्री संजय कुमार सिंह
वर्तमान पता : भोपाल
मध्य प्रदेश
संपर्क सूत्र : 6264080522
पंजीन दिनांक : (मार्च 2027 तक)



सिंह

अंजली सिंह

जन्मतिथि : 11/10/2004
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 10.20am
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.4 फीट
वर्ण : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : कश्यप
गोस्त्र (मामा) :
शिक्षा : BBA
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय :
पिता का नाम : श्री विरेन्द्र सिंह
वर्तमान पता : B-10, CTO कॉलोनी, बैरागढ़
भोपाल
संपर्क सूत्र : 9589666443, 8982650110
पंजीन दिनांक : (अप्रैल 2027 तक)



सिंह

सोनम सिंह

जन्मतिथि : 03/12/1995
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 9-20
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.4 इंच
वर्ण : गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं) : जदौन
गोस्त्र (मामा) : तोमर
शिक्षा : B-Tech
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 58,000 वर्षिक
पिता का नाम : श्री अवधेश सिंह
वर्तमान पता : 9/228 एकता पुरी
अशोका गार्डन, भोपाल
संपर्क सूत्र : 9039686961
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



सिंह

शालिनी सिंह

जन्मतिथि : 08/10/1990
जन्म स्थान : नरसिंहगढ़
जन्म समय : 6.00 शाम
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.5 इंच
वर्ण : गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं) : भरद्वाज
गोस्त्र (मामा) : चौहान
शिक्षा : Msc,MA, PGDCA,B-ed
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 35,000 माह
पिता का नाम : भारत सिंह
वर्तमान पता : PNT चौराह के पास
द्वरकापुरी कॉलोनी, भोपाल
संपर्क सूत्र : 9424472604
पंजीन दिनांक : (अगस्त 2027 तक)



सिंह

अंजली सिंह

जन्मतिथि : 04/08/1999
जन्म स्थान : बिहार
जन्म समय : 4.12
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.2 फीट
वर्ण/रंग : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : vyaghra
गोस्त्र (मामा) : राठौर
शिक्षा : B.ed, B.com
व्यवसाय/नौकरी :
मासिक आय :
पिता का नाम : श्री उमाशंकर सिंह
वर्तमान पता : 2nd bus stop, jhanda
chowk, nagpur
संपर्क सूत्र : 9939191048
पंजीन दिनांक : (मई 2027 तक)



सिंह

शिवांगी सिंह

जन्मतिथि : 16/02/1997
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 12:03
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.1 फीट
वर्ण :
गोस्त्र (स्वयं) : वत्स
गोस्त्र (मामा) : वैश्य
शिक्षा : BCA, MSC, BED
व्यवसाय/नौकरी : Finance
मासिक आय :
पिता का नाम : स्व. श्री बी.के.सिंह
वर्तमान पता : एल.आई.जी. 41
नरियल खेड़ा
संपर्क सूत्र : 9302735755
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



ठाकुर

प्रिया तोमर

जन्मतिथि : 17/07/1989
जन्म स्थान : परसिया
जन्म समय : 11:48 AM
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.3 इंच
वर्ण : फेयर
गोस्त्र (स्वयं) : तोमर
गोस्त्र (मामा) : राजपूत
शिक्षा : BE
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 30,000 माह
पिता का नाम : श्री राजेन्द्र सिंह ठाकुर
वर्तमान पता : शिव कॉलोनी, परसिया
जिला, छिंदवाड़ा
संपर्क सूत्र : 7489199380
पंजीन दिनांक : (मई 2027 तक)



राजपूत समाज मेट्रोमोनी

ठाकुर

सरला ठाकुर

जन्मतिथि : 03/10/1994
जन्म स्थान : सागर
जन्म समय : 6:30 AM
मांगलिक :
ऊँचाई : 5.3 इंच
वर्ण : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : कश्यप
गोस्त्र (मामा) : मारद्वान
शिक्षा : BA, LLB, PGDCA
व्यवसाय/नौकरी :
मासिक आय :
पिता का नाम : श्री शेरसिंह ठाकुर
वर्तमान पता : सागर, मप्र
संपर्क सूत्र : 8319588475
पंजीन दिनांक : 7987881518
(अप्रैल 2027 तक)



ठाकुर

अक्षया ठाकुर

जन्मतिथि : 19/09/2000
जन्म स्थान : परसिया
जन्म समय : 10.38 am
मांगलिक :
ऊँचाई : 5.3 फीट
वर्ण/ रंग :
गोस्त्र (स्वयं) : वत्स
गोस्त्र (मामा) :
शिक्षा : B.Sc, M.Sc
व्यवसाय/नौकरी :
आय :
पिता का नाम : श्री कैलाश ठाकुर
वर्तमान पता : भोपाल
मध्य प्रदेश
संपर्क सूत्र : 8889926654
पंजीन दिनांक : (जून 2027 तक)



परिहार

अनुष्का सिंह परिहार

जन्मतिथि : 13/10/1995
जन्म स्थान :
जन्म समय :
मांगलिक :
ऊँचाई : 5.7 फीट
वर्ण/ रंग :
गोस्त्र (स्वयं) : कौशल
गोस्त्र (मामा) :
शिक्षा : MBA, MS
व्यवसाय/नौकरी : व्यवसाय
आय :
पिता का नाम : श्री अजीत सिंह परिहार
वर्तमान पता : इंदौर
मध्य प्रदेश
संपर्क सूत्र : 9630632460
पंजीन दिनांक : (मई 2027 तक)



परिहार

नुपुर परिहार

जन्मतिथि : 10/07/1995
जन्म स्थान : नर्मदापुरम
जन्म समय : 12:40 am
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.5
वर्ण :
गोस्त्र (स्वयं) : पुण्डरीक
गोस्त्र (मामा) : व्यास
शिक्षा : BE
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 20 लाख, साल
पिता का नाम : श्री चन्द्रशेखर सिंह परिहार
वर्तमान पता : म-9, वार्ड-23 गौतम नगर
रसूलिया, नर्मदापुरम
संपर्क सूत्र : 6261958414
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



तोमर

हर्षिका तोमर

जन्मतिथि : 07/11/2001
जन्म स्थान : सिरोंज
जन्म समय : 5:10 PM
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.2 इंच
वर्ण : फेयर
गोस्त्र (स्वयं) : भरद्वान
गोस्त्र (मामा) : रजावत
शिक्षा : MBA
व्यवसाय/नौकरी :
मासिक आय :
पिता का नाम : श्री रामवीर सिंह तोमर
वर्तमान पता : 17, सिंधीगोल घर
शाहाजानाबाद, भोपाल
संपर्क सूत्र : 9826321602
पंजीन दिनांक : (सितंबर 2026 तक)



मोयल

कनिशका मोयल

जन्मतिथि : 07 march 1992
जन्म स्थान : क्वालियर
जन्म समय : 11.30 pm
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.0 फीट
वर्ण/ रंग : Dusky
गोस्त्र (स्वयं) : वत्स
गोस्त्र (मामा) : चौहान
शिक्षा : GNM, Post Basic B.Sc Nursing
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 3-4 लाख साल
माता का नाम : श्रीमती चन्द्रबाला मोयल
वर्तमान पता : H. no 1517, chander marg
Mhow, mp
संपर्क सूत्र : 9826539606
पंजीन दिनांक : (अक्टूबर 2027 तक)



राजपूत

आज्ञा राजपूत

जन्मतिथि : 02/07/1991
जन्म स्थान : विदिशा
जन्म समय : 4.00 am
मांगलिक :
ऊँचाई : 5.4 फीट
वर्ण/ रंग :
गोस्त्र (स्वयं) : सेंगर
गोस्त्र (मामा) :
शिक्षा : M tech
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय :
पिता का नाम : श्री राजपाल सिंह सेंगर
वर्तमान पता : 28 शीतला माता गली बांसकुली
विदिशा मप्र
संपर्क सूत्र : 8770140281, 9926765944
पंजीन दिनांक : (मई 2027 तक)



सिसोदिया

गरिमा सिसोदिया

जन्मतिथि : 19/02/1996
जन्म स्थान : हरसूद
जन्म समय : 11:15 am
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 5.8
वर्ण :
गोस्त्र (स्वयं) : सिसोदिया
गोस्त्र (मामा) : तोमर
शिक्षा : BSC
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 75,000
पिता का नाम : श्री शैतान सिंह सिसोदिया
वर्तमान पता : MIG-112 गीताजली कामप.
टीटी नगर, भोपाल
संपर्क सूत्र : 9926670423
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



सेंगर

शिवालिका सिंह सेंगर

जन्मतिथि : 03/03/1992
जन्म स्थान : जबलपुर
जन्म समय : 12.35 am
मांगलिक :
ऊँचाई : 5.5
वर्ण : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : गौतम
गोस्त्र (मामा) : पंवार
शिक्षा : बी.कॉम
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 3-4 lpa
पिता का नाम : श्री अविनाश सिंह सेंगर
वर्तमान पता : इंदौर
मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : 9424313964
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



गैहरवार

सुरभि सिंह गैहरवार

जन्मतिथि	: 27/06/1995
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	:
मांगलिक	:
ऊंचाई	: 5.7 इंच
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	:
गोस्त्र (मामा)	:
शिक्षा	: B.com
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	:
पिता का नाम	: श्री दिलीप सिंह गैहरवार
वर्तमान पता	:
संपर्क सूत्र	: 8827587287
पंजीन दिनांक	: (अप्रैल 2027 तक)



खीची

हिमांगी राजा खीची

जन्मतिथि	: 30/11/96
जन्म स्थान	: दतिया
जन्म समय	: 5.50 pm
मांगलिक	: आशिक
ऊंचाई	: 5.4 फीट
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: बुंदेला
शिक्षा	: B. Pharma & LLB
व्यवसाय/नौकरी	:
आय	:
पिता का नाम	: श्री भूपेन्द्र सिंह खीची
वर्तमान पता	: कटारा हिल्स भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9131620265
पंजीन दिनांक	: (अप्रैल 2027 तक)



सिसोदिया

शिवनी सिसोदिया

जन्मतिथि	: 12/12/1994
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	: 10:40 pm
मांगलिक	: आशिक
ऊंचाई	: 161 cm
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	:
गोस्त्र (मामा)	:
शिक्षा	: MBA
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 70,000
पिता का नाम	: श्री महेंद्र सिंह सिसोदिया
वर्तमान पता	: छत्रसाल नगर भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9425392833
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



भदोरिया

सुरभि राजपूत

जन्मतिथि	: 14/09/1998
जन्म स्थान	: नर्मदापुरम
जन्म समय	: 6:30 am
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.3 फीट
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	: व्यासत्रिषि
गोस्त्र (मामा)	: कश्यप
शिक्षा	: PGDFM
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 80,000
पिता का नाम	: श्री सरेन्द्र सिंह राजपूत
वर्तमान पता	: ग्राम डोलिरया जिला नर्मदापुरम
संपर्क सूत्र	: 9131866784
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चंदेल

पूजा सिंह चंदेल

जन्मतिथि	: 08/07/1992
जन्म स्थान	: अनुपपुर
जन्म समय	: 10:32 PM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.3 इंच
वर्ण	: फेयर
गोस्त्र (स्वयं)	: चन्द्राजन
गोस्त्र (मामा)	: चौहान
शिक्षा	: BAMS
व्यवसाय/नौकरी	: डॉक्टर
मासिक आय	:
पिता का नाम	: स्व. श्री शैलेन्द्र सिंह चंदेल
वर्तमान पता	: sr-4 रूद्राक्ष पार्क भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9039126561
पंजीन दिनांक	: (मई 2026 तक)



बिसेन

मनुश्री सिंह बिसेन

जन्मतिथि	: 27/02/1999
जन्म स्थान	: दमोह
जन्म समय	: 4:45 AM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.3 इंच
वर्ण	: फेयर
गोस्त्र (स्वयं)	: पारमार
गोस्त्र (मामा)	: भरद्वाज
शिक्षा	: B.sc. B-ed
व्यवसाय/नौकरी	: नहीं
मासिक आय	: नहीं
पिता का नाम	: श्री मनोज सिंह बिसेन
वर्तमान पता	: वर्धमान कालोनी नियर वैशाली नगर, दमोह
संपर्क सूत्र	: 9479819413, 8349555757
पंजीन दिनांक	: (जून 2027 तक)



सिकरवार

शुभांगी सिकरवार

जन्मतिथि	: 10/02/1995
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	: 3:20 am
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.3
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: मारद्वज
गोस्त्र (मामा)	: गहलोत
शिक्षा	: BA, PGDCA
व्यवसाय/नौकरी	:
मासिक आय	:
पिता का नाम	: श्री गजेन्द्र सिंह सिकरवार
वर्तमान पता	: कैम्पस अवधपुरी, खजूरी रोड, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9329076046, 9752135119
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



जादौन

दिव्या जादौन

जन्मतिथि	: 17/07/1995
जन्म स्थान	: न्वालियर
जन्म समय	: 1:50 AM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.4 फीट
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: अत्री
गोस्त्र (मामा)	: कुशवाह
शिक्षा	: B.A.
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	:
पिता का नाम	: श्री दिनेश सिंह जादौन
वर्तमान पता	: wz 911/2, Naraina New Delhi
संपर्क सूत्र	: 9990184656
पंजीन दिनांक	: (जून 2026 तक)



मण्डलोई

आरती मण्डलोई

जन्मतिथि	: 17/10/1998
जन्म स्थान	: खण्डवा
जन्म समय	: 9:30
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.1 इंच
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	:
गोस्त्र (मामा)	: चौहान
शिक्षा	: BBA, LLB
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 15000
पिता का नाम	: लखन सिंह मण्डलोई
वर्तमान पता	: कोलार रोड, भोपाल मध्य प्रदेश
संपर्क सूत्र	: 9201633503
पंजीन दिनांक	: (अक्टूबर 2026 तक)



राजपूत समाज मेट्रोमोनी

राजपूत

मनीष राजपूत

जन्मतिथि : 19/07/1996
जन्म स्थान : डोंगरवाड़ा होशंगाबाद
जन्म समय : 11.03 pm
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 173 cm
वर्ण : गेहूँआ
गोस्त्र (स्वयं) : परिहार
गोस्त्र (मामा) : चौहान
शिक्षा : **Beachelor of eng.**
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 1,80,000 वार्षिक
पिता का नाम : स्व.श्री अर्जुन राजपूत
वर्तमान पता : डोंगरवाड़ा होशंगाबाद
संपर्क सूत्र : 8305864859
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



राजपूत

कल्पेश सिंह राजपूत

जन्मतिथि : 14/12/1997
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 8.20 pm
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 153 cm
वर्ण : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : गौतम
गोस्त्र (मामा) : बच्छ
शिक्षा : मास्टर इन बिजनेस
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 35,000 मासिक
पिता का नाम : श्री विजय सिंह राजपूत
वर्तमान पता : 66 गली नं. 11 पुरुषोत्तम नगर फेज-2, भोपाल
संपर्क सूत्र : 9893282992
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



राजपूत

अनमोल प्रताप सिंह

जन्मतिथि : 11/12/1994
जन्म स्थान : सिंगरौली
जन्म समय : 7:29 PM
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 5.11 इंच
वर्ण : फेयर
गोस्त्र (स्वयं) : गोस्त्र (मामा)
शिक्षा : **MBA**
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 6.0 एलपीए
पिता का नाम : ए.के. सिंह
वर्तमान पता : भोपाल
संपर्क सूत्र : 7000524061
पंजीन दिनांक : (अगस्त 2027 तक)



राजपूत

आयुष सिंह राजपूत

जन्मतिथि : 24/08/2001
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 10:13 PM
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 5-5 इंच
वर्ण : गेहूँआ
गोस्त्र (स्वयं) : बघेल
गोस्त्र (मामा) : सिसोदिया
शिक्षा : **B.com**
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 25,000
पिता का नाम : श्री उमेश सिंह राजपूत
वर्तमान पता : 4/1 JR anuja village Hoshangabad rod
संपर्क सूत्र : 8871449447
पंजीन दिनांक : (जून 2027 तक)



राजपूत

बीरेन्द्र सिंह जादौन

जन्मतिथि : 01/06/1995
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 10:13 PM
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 5.6
वर्ण : गेहूँआ
गोस्त्र (स्वयं) : जदौन
गोस्त्र (मामा) : बैस
शिक्षा : **BCA, PGCA**
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 20,000
पिता का नाम : श्री अमर सिंह राजपूत
वर्तमान पता : ग्राम परसौरा, पो. मानपुर जिला रायसेन
संपर्क सूत्र : 6265719627
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



राजपूत

हेमंत सिंह

जन्मतिथि : 28/02/1995
जन्म स्थान : पिपरिया
जन्म समय : 4:45
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 5.5
वर्ण : गौतम
गोस्त्र (स्वयं) : गौतम
गोस्त्र (मामा) : चौहान
शिक्षा : **BSC.IIT**
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 35,000
पिता का नाम : स्व. श्री लक्ष्मण सिंह
वर्तमान पता : बागमुगलिया भोपाल
संपर्क सूत्र : 9109566926
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



राजपूत

प्रवेन्द्र सिंह

जन्मतिथि : 01/04/1999
जन्म स्थान : गंजवासीदा
जन्म समय : 4.15 am
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 168 cm
वर्ण : संवला
गोस्त्र (स्वयं) : सिसोदिया
गोस्त्र (मामा) : कछवाहा
शिक्षा : **MBA**
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 30,000 मासिक
पिता का नाम : श्री रामबाबू सिंह राजपूत
वर्तमान पता : पवित्र परिसर गंजवासीदा
संपर्क सूत्र : 9826857256
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



राजपूत

रोहित राजपूत

जन्मतिथि : 20/07/2004
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 5:30 AM
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 5.6 इंच
वर्ण : फेयर
गोस्त्र (स्वयं) : जादौन
गोस्त्र (मामा) : नेकेले
शिक्षा : 10th
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 12,000
पिता का नाम : श्री प्रावीन राजपूत
वर्तमान पता : लहारपुर कटारा हिल्स भोपाल, मप्र
संपर्क सूत्र : 8085234062
पंजीन दिनांक : (दिसंबर 2026 तक)



राजपूत

पीयूष सिंह राजपूत

जन्मतिथि : 22/09/2003
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 07:15 PM
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 5-9 इंच
वर्ण : गेहूँआ
गोस्त्र (स्वयं) : बघेल
गोस्त्र (मामा) : सिसोदिया
शिक्षा : **B.com**
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 18,000
पिता का नाम : श्री उमेश सिंह राजपूत
वर्तमान पता : 4/1 JR anuja village Hoshangabad rod
संपर्क सूत्र : 8871449447
पंजीन दिनांक : (जून 2027 तक)



सिंह **आयूष सिंह**

जन्मतिथि : 31/08/1995
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 4.15 pm
मांगलिक :
ऊंचाई : 5.7 फीट
वर्ण/ रंग : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : shandilya
गोस्त्र (मामा) : Bharadwaj
शिक्षा : Bsc in hospitality in IHM
व्यवसाय/नौकरी :
आय :
पिता का नाम : श्री धीरेन्द्र सिंह
वर्तमान पता : M-30 shakshi resort, madankni, kolar, Bpl
संपर्क सूत्र : 9098624561
पंजीन दिनांक : (अक्टूबर 2027 तक)



सिंह **अभय राज**

जन्मतिथि : 16/09/1997
जन्म स्थान : पटना, बिहार
जन्म समय : 7.00 pm
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 180 cm
वर्ण/ रंग : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : श्रावणक
गोस्त्र (मामा) : कौडिल
शिक्षा : PG डिप्लोमा
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 80 हजार
पिता का नाम : श्री अशोक कुमार सिंह
वर्तमान पता : मकान नं.37 स्काई सिटी सीटीओ रोड, भोपाल
संपर्क सूत्र : 9430876113, 9308035300
पंजीन दिनांक : (अगस्त 2027 तक)



सिंह **प्रादीप सिंह**

जन्मतिथि : 06/07/1991
जन्म स्थान : जबलपुर
जन्म समय : 4.55 am
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 5.10 फीट
वर्ण/ रंग : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : बोझियां
गोस्त्र (मामा) : कटारे
शिक्षा : MBA, BE
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 13 lpa
पिता का नाम : श्री रातेन्द्र सिंह
वर्तमान पता : ग्वालियर मध्य प्रदेश
संपर्क सूत्र : 9827587260
पंजीन दिनांक : (जुलाई 2027 तक)



सिंह **वरुण सिंह**

जन्मतिथि : 01/12/1998
जन्म स्थान : जबलपुर
जन्म समय : 10 am
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 5.11 फीट
वर्ण/ रंग : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : गौतम
गोस्त्र (मामा) : भरद्वज
शिक्षा : B.Sc, MA
व्यवसाय/नौकरी : व्यवसाय
आय : 20 लाख annam
पिता का नाम : श्री बीएम् सिंह
वर्तमान पता : शिव नगर कॉलोनी विदिशा रोड, भोपाल
संपर्क सूत्र : 9993603471, 8770639812
पंजीन दिनांक : (जून 2027 तक)



सिंह **हर्ष सिंह**

जन्मतिथि : 25/03/1997
जन्म स्थान : रीवा
जन्म समय :
मांगलिक :
ऊंचाई : 6 फीट
वर्ण : कश्मीर
गोस्त्र (स्वयं) : कश्यप
गोस्त्र (मामा) :
शिक्षा : B.Tech, MBA
व्यवसाय/नौकरी : Infosys
आय :
पिता का नाम : श्री योगेन्द्र सिंह
वर्तमान पता :
संपर्क सूत्र : 8408090648
पंजीन दिनांक : (नवंबर 2026 तक)



सिंह **पुलकित सिंह**

जन्मतिथि : 08/01/1999
जन्म स्थान : बुरहानपुर
जन्म समय : 11.10 AM
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 5.11 इंच
वर्ण : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : भारद्वाज
गोस्त्र (मामा) : वत्स
शिक्षा : B.Tech
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 20 लाख साल
पिता का नाम : श्री सुनील कुमार सिंह
वर्तमान पता : DM 22/202 IBD hall mark city kolar road, Bhopal
संपर्क सूत्र : 9754331311
पंजीन दिनांक : (जनवरी 2027 तक)



सिंह **किशलय सिंह**

जन्मतिथि : 17/08/1997
जन्म स्थान : बिहार
जन्म समय : 5.30 am
मांगलिक :
ऊंचाई : 6 फीट
वर्ण/ रंग : गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं) : वत्स
गोस्त्र (मामा) : वशिष्ठ
शिक्षा : MTech, B Tech
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
आय : 10 लाख LPA
पिता का नाम : श्री मनोज सिंह
वर्तमान पता : छपरा निवास, माधोविहारी लेन सलीमपुर, छपरा सरद, बिहार
संपर्क सूत्र : 9955512661, 6206103199
पंजीन दिनांक : (मई 2027 तक)



सिंह **सतेन्द्र प्रताप सिंह**

जन्मतिथि : 26/02/1993
जन्म स्थान :
जन्म समय : AM
मांगलिक :
ऊंचाई : 5.4 इंच
वर्ण : कश्मीर
गोस्त्र (स्वयं) : कश्यप
गोस्त्र (मामा) :
शिक्षा :
व्यवसाय/नौकरी : ब्लॉक कोओडीनेटर, पंचायत
आय :
पिता का नाम : नरेन्द्र सिंह राठौर
वर्तमान पता : पाठक वार्ड, भट्टा मोहल्ला कटनौ, मगध
संपर्क सूत्र : 7974668542, 9826389817
पंजीन दिनांक : (नवंबर 2026 तक)



सिंह **यश विक्रम सिंह**

जन्मतिथि : 25/06/1995
जन्म स्थान : बिलासपुर
जन्म समय : 5.45 PM
मांगलिक : नहीं
ऊंचाई : 6 फीट
वर्ण : गौरा
गोस्त्र (स्वयं) : कश्यप
गोस्त्र (मामा) : बनावर
शिक्षा : MBBS, PG
व्यवसाय/नौकरी : डॉक्टर
आय : 20 लाख
पिता का नाम : डॉ. केबी सिंह
वर्तमान पता : एश्वर्या ओल्ड हाई कोर्ट रोड, बिलासपुर, छग
संपर्क सूत्र : 9425548132
पंजीन दिनांक : (अक्टूबर 2028 तक)



सिंह

कुनाल सिंह

जन्मतिथि	: 12.10.1998
जन्म स्थान	: इंदौर
जन्म समय	: 5.50 pm
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.10 फीट
वर्ण/रंग	: नारमल
गोस्त्र (स्वयं)	: वस्त
गोस्त्र (मामा)	: भदौरिया
शिक्षा	: B.Tec IT
व्यवसाय/नौकरी	: Bussiness
आय	:
पिता का नाम	: श्री नवीन कुमार सिंह
वर्तमान पता	: B-108 Qasis township bypass, jhalaniya, indor
संपर्क सूत्र	: 9826127700, 9691785479
पंजीन दिनांक	: (अक्टूबर 2027 तक)



सिंह

वैभव सिंह

जन्मतिथि	: 24/03/1993
जन्म स्थान	: टीकमगढ़
जन्म समय	: 12:05 AM
मांगलिक	: मांगलिक
ऊंचाई	: 6 फीट
वर्ण	: गेहूँआ
गोस्त्र (स्वयं)	: घटा
गोस्त्र (मामा)	: मौखरिया
शिक्षा	: MBA marketing-HR
व्यवसाय/नौकरी	: म्यूजिक डारेक्टर
आय	: 4-5 लाख anu.
पिता का नाम	: श्री विनोद कुमार सिंह
वर्तमान पता	: B-23, fortune E-8 trilanga, BPL
संपर्क सूत्र	: 9406928811
पंजीन दिनांक	: (अप्रैल 2026 तक)



सिंह

वरूण प्रताप सिंह धाकरे

जन्मतिथि	: 15/03/1997
जन्म स्थान	: नवालिखर
जन्म समय	: 1:53 PM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.10 इंच
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: मृगु
गोस्त्र (मामा)	: तोमर
शिक्षा	: B-Tech
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 14 लाख वर्ष
पिता का नाम	: श्री ओंकार सिंह धाकरे
वर्तमान पता	: इन्द्रप्रस्थ कॉलोनी विदिशा
संपर्क सूत्र	: 9926414437
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



सिंह

अंश सिंह

जन्मतिथि	: 11/06/2004
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	: 11.48 pm
मांगलिक	:
ऊंचाई	: 5.9 फीट
वर्ण/रंग	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: भारद्वाज
गोस्त्र (मामा)	: कौशिक
शिक्षा	: B.com
व्यवसाय/नौकरी	:
आय	:
पिता का नाम	: श्री अनिल सिंह
वर्तमान पता	: मकान नं. 47 जागृति कॉलोनी पुष्पा नगर, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9074228697, 9144431096
पंजीन दिनांक	: (अगस्त 2027 तक)



सिंह

सागर सिंह

जन्मतिथि	: 21/03/1996
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	: 9.00 pm
मांगलिक	:
ऊंचाई	: 5.6 फीट
वर्ण/रंग	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: कौशिक
गोस्त्र (मामा)	: भारद्वाज
शिक्षा	: B.co,
व्यवसाय/नौकरी	:
आय	:
पिता का नाम	: श्री बजेश सिंह
वर्तमान पता	: मकान नं. 87/0 सेक्टर सुभाष कॉलोनी, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 8357902590, 8357902590
पंजीन दिनांक	: (अगस्त 2027 तक)



सिंह

लोकेश सिंह

जन्मतिथि	: 14/09/1995
जन्म स्थान	: जोधपुर
जन्म समय	: 12.55 am
मांगलिक	:
ऊंचाई	: 5.9 फीट
वर्ण/रंग	:
गोस्त्र (स्वयं)	: सीसोदिया
गोस्त्र (मामा)	:
शिक्षा	: Bachelor of designig
व्यवसाय/नौकरी	:
आय	:
पिता का नाम	: श्री देवेन्द्र सिंह
वर्तमान पता	: जाजीवाल गेहलोतन जोधपुर, राजस्थान
संपर्क सूत्र	: 9602299900, 8290337901
पंजीन दिनांक	: (मई 2027 तक)



सिंह

अलिंद सिंह

जन्मतिथि	: 29/12/1999
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	: 1.04 pm
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 6 फीट
वर्ण/रंग	: गेहूँआ
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: कश्यप
शिक्षा	: BBA
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 37,500
पिता का नाम	: अशोक कुमार सिंह बिसेन
वर्तमान पता	: बी-72/4 हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी कोहेफिजा, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9826095171
पंजीन दिनांक	: (फरवरी 2027 तक)



चौहान

शौर्यवीर सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 12/09/1993
जन्म स्थान	: गुरेना
जन्म समय	: 5:00 AM
मांगलिक	: हां
ऊंचाई	: 5.7 इंच
वर्ण	: फेयर
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: भदौरिया
शिक्षा	: BE, C- Tech
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	:
पिता का नाम	: उदयवीर सिंह चौहान
वर्तमान पता	: भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9301593771
पंजीन दिनांक	: (सितंबर 2027 तक)



चौहान

प्रशान्त सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 24/12/1991
जन्म स्थान	: विदिशा
जन्म समय	: 5.20 AM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 6 फीट
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	: चौहान
गोस्त्र (मामा)	: उमठ
शिक्षा	: M-tec ing.
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 60,000
पिता का नाम	: श्री इन्दर सिंह
वर्तमान पता	: कन्या हा.से. स्कूल के सामने, (राजगढ़)
संपर्क सूत्र	: 9907257396, 7240849260
पंजीन दिनांक	: (अप्रैल 2026 तक)



चौहान

देवानंद चौहान

जन्मतिथि	: 21/07/1989
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	:
मांगलिक	:
ऊंचाई	: 5.11 फीट
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	: राजपूत
गोस्त्र (मामा)	:
शिक्षा	: MA, PGDCA
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	:
पिता का नाम	: श्री केलाशचंद्र चौहान
वर्तमान पता	: 4 सनीया कॉलोनी, नियर केलाश नगर, बैरागढ़, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9617290708
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चौहान

सिद्धार्थ सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 15/11/1992
जन्म स्थान	: सागर
जन्म समय	: 7:00 PM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.8 इंच
वर्ण	: फेसर
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: मरछाज
शिक्षा	: MBA
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 15 लाख साल
पिता का नाम	: डॉ. देवेन्द्र बहादुर सिंह
वर्तमान पता	: अयोध्या नगर भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9926551982
पंजीन दिनांक	: (मई 2027 तक)



चौहान

सत्यम चौहान

जन्मतिथि	: 24/05/1998
जन्म स्थान	: करेली
जन्म समय	: 9 pm
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.8
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	: भारद्वाज
गोस्त्र (मामा)	: राजपूत
शिक्षा	: B.E
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 50,000
पिता का नाम	: श्री ओमशरण सिंह चौहान
वर्तमान पता	: बधुबार, तह. करेली जिला नरसिंहपुर
संपर्क सूत्र	: 9425433445
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चौहान

पुष्पराज सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 03/02/1989
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	: 10.18 am
मांगलिक	:
ऊंचाई	: 5.6
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: कटोच
शिक्षा	: BE
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	:
पिता का नाम	: श्री चंद्रहंस सिंह चौहान
वर्तमान पता	: F-1 रेवर्स अपार्टमेंट p-402-D कोलार, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9826778975
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चौहान

धर्मेन्द्र सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 04/08/1988
जन्म स्थान	: बिसुखेड़ी
जन्म समय	:
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.9
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	: चौहान
गोस्त्र (मामा)	: सिसोदिया
शिक्षा	: 8वीं
व्यवसाय/नौकरी	: किसान
मासिक आय	:
पिता का नाम	: श्री लाल सिंह चौहान
वर्तमान पता	: ग्राम बिसुखेड़ी जिला सिहोर
संपर्क सूत्र	: 7748996322
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चौहान

निर्भय सिंह

जन्मतिथि	: 07/07/1990
जन्म स्थान	: कटेठी कानपुर देहात
जन्म समय	:
मांगलिक	:
ऊंचाई	: 5.5
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: कश्यप
शिक्षा	: 10वीं
व्यवसाय/नौकरी	: किसान
मासिक आय	: 15 से 20 हजार
पिता का नाम	: स्व. हरिश्चन्द्र सिंह चौहान
वर्तमान पता	: कटेठी कानपुर देहात उत्तर प्रदेश
संपर्क सूत्र	: 7319790720, 9984701127
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



चौहान

सुमित सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 15/06/1996
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	:
मांगलिक	:
ऊंचाई	: 5.11 फीट
वर्ण/रंग	:
गोस्त्र (स्वयं)	:
गोस्त्र (मामा)	:
शिक्षा	: MBA in Banking
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 5 लाख
पिता का नाम	: श्री सत्यपाल सिंह चौहान
वर्तमान पता	: Jr. MIG 73 sector A, Satlapur, mandideep
संपर्क सूत्र	: 9009153322, 9589330579
पंजीन दिनांक	: (अक्टूबर 2027 तक)



चौहान

प्रशांत सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 11/12/1995
जन्म स्थान	: खंडवा
जन्म समय	: 10.30 am
मांगलिक	: आशिक
ऊंचाई	: 5.8 फीट
वर्ण/रंग	:
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: राठौर
शिक्षा	: मास्टर डिग्री
व्यवसाय/नौकरी	: शासकीय सेवा (पुलिस)
आय	: 30 हजार प्रतिमाह
पिता का नाम	: स्व. श्री प्रमोद सिंह चौहान
वर्तमान पता	: डीआरपी लाइन, धार मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र	: 7000676819, 8819991433
पंजीन दिनांक	: (जुलाई 2027 तक)



चौहान

अनुराग सिंह चौहान

जन्मतिथि	: 4 /06/1997
जन्म स्थान	: खंडवा
जन्म समय	: 5.42 pm
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.4 फीट
वर्ण/रंग	:
गोस्त्र (स्वयं)	: निरवान
गोस्त्र (मामा)	: पवार
शिक्षा	: चार्टर्ड एकाउंटेंट
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 13 LPA
पिता का नाम	: राजेन्द्र सिंह चौहान
वर्तमान पता	: देवास मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र	: 9907975888, 9575133010
पंजीन दिनांक	: (जुलाई 2027 तक)



तेमर

पंकज तोमर

जन्मतिथि	: 02/10/1997
जन्म स्थान	:
जन्म समय	: 11.45 am
मांगलिक	: हां
ऊंचाई	: 5.11 फीट
वर्ण/ रंग	:
गोस्त्र (स्वयं)	: तंवर
गोस्त्र (मामा)	: मोरी
शिक्षा	: B.Com
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	:
पिता का नाम	: श्री मानसिंह तोमर
वर्तमान पता	: H.No-1 बालाजी धाम नयापुरा कोलार रोड, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 8989588796
पंजीन दिनांक	: (जुलाई 2027 तक)



तेमर

आदित्य सिंह तोमर

जन्मतिथि	: 5/06/1998
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	: 4.20 pm
मांगलिक	: है
ऊंचाई	: 178 cm
वर्ण	: गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं)	: विस्वामित्र
गोस्त्र (मामा)	: बैश
शिक्षा	: B Tech
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 79,000 मासिक
पिता का नाम	: श्री राजेश सिंह तोमर
वर्तमान पता	: 38 अमर विहार, रीगल कलश खजुरी कलां रोड पिपलानी
संपर्क सूत्र	: 9893954940
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



तेमर

प्रतीक तोमर

जन्मतिथि	: 01/12/1991
जन्म स्थान	: परासिया
जन्म समय	: 4:40 AM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.8 इंच
वर्ण	: गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं)	: तोमर
गोस्त्र (मामा)	: राजपूत
शिक्षा	: BE
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 6 लाख वर्ष
पिता का नाम	: श्री राजेन्द्र सिंह ठाकुर
वर्तमान पता	: शिव कॉलोनी, परसिया जिला, छिंदवाड़ा
संपर्क सूत्र	: 7489199380
पंजीन दिनांक	: (मई 2027 तक)



तेमर

अभिजीत तोमर

जन्मतिथि	:
जन्म स्थान	: झांसी
जन्म समय	: 12.50 pm
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.6 फीट
वर्ण/ रंग	: गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं)	: 000
गोस्त्र (मामा)	: 000
शिक्षा	: B.com, ITI
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	:
पिता का नाम	: श्री देवेन्द्र सिंह तोमर
वर्तमान पता	: इटारसी, साई फॉर्च्यून सोना सवारी नाके के पास
संपर्क सूत्र	: 7974920653
पंजीन दिनांक	: (मई 2027 तक)



तेमर

प्रियंक तोमर

जन्मतिथि	: 17/06/1993
जन्म स्थान	: परासिया
जन्म समय	: 7:15 AM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.8 इंच
वर्ण	: फेयर
गोस्त्र (स्वयं)	: तोमर
गोस्त्र (मामा)	: राजपूत
शिक्षा	: MBA
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 6 लाख वर्ष
पिता का नाम	: श्री राजेन्द्र सिंह ठाकुर
वर्तमान पता	: शिव कॉलोनी, परसिया जिला, छिंदवाड़ा
संपर्क सूत्र	: 7489199380
पंजीन दिनांक	: (मई 2027 तक)



तेमर

सहिल सिंह तोमर

जन्मतिथि	: 06/10/1998
जन्म स्थान	: नई दिल्ली
जन्म समय	: 4.25 pm
मांगलिक	: हां
ऊंचाई	: 5.7 फीट
वर्ण	:
गोस्त्र (स्वयं)	: तोमर
गोस्त्र (मामा)	:
शिक्षा	: Business administration
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 10,00,000 per annum
पिता का नाम	: श्री देवेन्द्र सिंह तोमर
वर्तमान पता	: वार्ड-10, नंदवाना, बड़े बालाजी मंदिर, विदिशा, मप्र
संपर्क सूत्र	: 8319023115
पंजीन दिनांक	: (अप्रैल 2027 तक)



ठाकुर

हितेन्द्र ठाकुर

जन्मतिथि	: 08 जून 1997
जन्म स्थान	: उज्जैन
जन्म समय	: 9:24 AM
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.4 इंच
वर्ण	: गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं)	: सिकरवार
गोस्त्र (मामा)	: तोमर
शिक्षा	: BE/B.Tech
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: INR 10 से 15 लाख
पिता का नाम	: रमेश ठाकुर
वर्तमान पता	: भोपाल
संपर्क सूत्र	: 8989710598
पंजीन दिनांक	: (अक्टूबर 2027 तक)



ठाकुर

राहुल सिंह ठाकुर

जन्मतिथि	: 19/07/1996
जन्म स्थान	: तराना
जन्म समय	: 11:30
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.8 इंच
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: डेंगर
गोस्त्र (मामा)	: दुशावद
शिक्षा	: इंजीनियरिंग
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 52,000
पिता का नाम	: स्व.श्री दिलीप सिंह ठाकुर
वर्तमान पता	: 23/2c साकेत नगर भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9755123754
पंजीन दिनांक	: (अगस्त 2027 तक)



ठाकुर

अशोक सिंह ठाकुर

जन्मतिथि	: 29/05/1992
जन्म स्थान	: जबलपुर
जन्म समय	: 6.45 am
मांगलिक	: नहीं
ऊंचाई	: 5.6 फीट
वर्ण/ रंग	: गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं)	: कश्यप
गोस्त्र (मामा)	: केवट
शिक्षा	: 8वीं
व्यवसाय/नौकरी	: होटल कर्मचारी (शेफ)
आय	: 3 लाख वर्ष
पिता का नाम	: हरीश चंद्र सिंह ठाकुर
वर्तमान पता	: न्यू नर्मदा नगर मालगुजार परिसर गौहलपुर जबलपुर
संपर्क सूत्र	: 9827963958
पंजीन दिनांक	: (मई 2027 तक)



कुशवाह

अजय प्रताप सिंह कुशवाह

जन्मतिथि	: 31/07/1986
जन्म स्थान	: शिवपुरी
जन्म समय	: 3:55
मांगलिक	: हाँ
ऊँचाई	: 5.6 फीट
वर्ण	: गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं)	: गौतम
गोस्त्र (मामा)	: तोमर
शिक्षा	: MBA
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 8 लाख anu
पिता का नाम	: श्री राघवेंद्र सिंह कुशवाह
वर्तमान पता	: 15 गांधी नगर कॉलोनी शिवपुरी
संपर्क सूत्र	: 9926645045
पंजीन दिनांक	: (फरवरी 2027 तक)



तलाक सुदा

कुशवाह

विजय प्रताप सिंह कुशवाह

जन्मतिथि	: 01/05/1989
जन्म स्थान	: शिवपुरी
जन्म समय	: 6:30 AM
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 157 से.मी.
वर्ण	: गोस्त्र (स्वयं)
गोस्त्र (स्वयं)	: गौतम
गोस्त्र (मामा)	: तोमर
शिक्षा	: 12th
व्यवसाय/नौकरी	: व्यवसाय
आय	: 41,667 मासिक
पिता का नाम	: श्री राघवेंद्र सिंह कुशवाह
वर्तमान पता	: हाउस नं. 15 गांधी कॉलोनी, शिवपुरी
संपर्क सूत्र	: 9926645045
पंजीन दिनांक	: (फरवरी 2027 तक)



जादौन

आशीष सिंह जादौन

जन्मतिथि	: 16/10/1991
जन्म स्थान	: ग्वालियर
जन्म समय	: 11 pm
मांगलिक	: है
ऊँचाई	: 5.7 फीट
वर्ण/ रंग	: गोरा
गोस्त्र (स्वयं)	: अत्रि
गोस्त्र (मामा)	: भदौरिया
शिक्षा	: ग्रेजुएशन
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 30,000 प्रति माह
पिता का नाम	: श्री राजेन्द्र सिंह जादौन
वर्तमान पता	: संकेश्वर सिटी, अरविंदो हॉस्पिटल के पास, इंदौर
संपर्क सूत्र	: 8624940892
पंजीन दिनांक	: (अक्टूबर 2027 तक)



सिसोदिया

अर्जुन सिंह राजपूत

जन्मतिथि	: 01/01/2000
जन्म स्थान	: पोचानेर
जन्म समय	: नहीं
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 5.8
वर्ण	: गोस्त्र (स्वयं)
गोस्त्र (स्वयं)	: सिसोदिया
गोस्त्र (मामा)	: उमठ
शिक्षा	: BA, IIT
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 40,000
पिता का नाम	: श्री गजराज सिंह राजपूत
वर्तमान पता	: ग्राम पोचानेर, तह. कालापिपल, जिला शाजपुर
संपर्क सूत्र	: 822597792
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



परिहार

संतोष सिंह परिहार

जन्मतिथि	: 02/02/1994
जन्म स्थान	: भोपाल
जन्म समय	: 12:45 AM
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 5.11 इंच
वर्ण	: गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं)	: कौशल
गोस्त्र (मामा)	: कश्यप
शिक्षा	: B-Tech, M-Tech
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 55 लाख प्रति साल
पिता का नाम	: श्री परिमल सिंह परिहार
वर्तमान पता	: 492 साईराम कॉलोनी सेमरागेट-1, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9993319740
पंजीन दिनांक	: (मई 2026 तक)



निकम

विशाल सिंह निकम

जन्मतिथि	: 21/07/1998
जन्म स्थान	: आमगांव बड़ा
जन्म समय	: 6:35 am
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 5.6
वर्ण	: गोस्त्र (स्वयं)
गोस्त्र (स्वयं)	: वशिष्ठ
गोस्त्र (मामा)	: सिसोदिया
शिक्षा	: BA
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 80,000
पिता का नाम	: श्री माधोसिंह निकम
वर्तमान पता	: डी-11 स्वामी विवेकानन्द परिसर, कटारा हिल्स, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 8878865124
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



भदौरिया

सुनील सिंह भदौरिया

जन्मतिथि	: 16/06/1993
जन्म स्थान	: भिंड
जन्म समय	: 4:00
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 5.7 इंच
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र (मामा)	: गोस्त्र (स्वयं)
शिक्षा	: B.A, PGDCA
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 24,000 मासिक
पिता का नाम	: श्री विश्वनाथ सिंह भदौरिया
वर्तमान पता	: D-45 सेक्टर-2 आशाराम नगर, बागमुगालिया
संपर्क सूत्र	: 9039905338
पंजीन दिनांक	: (फरवरी 2026 तक)



नायडू

वेकटेश नायडू

जन्मतिथि	: 14/07/1988
जन्म स्थान	: जबलपुर
जन्म समय	: 7:57
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 5.7 इंच
वर्ण	: गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं)	: कश्यप
गोस्त्र (मामा)	: गोस्त्र (स्वयं)
शिक्षा	: BDS
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 95,000 मासिक
पिता का नाम	: श्री अनिल कुमार नायडू
वर्तमान पता	: 252 श्रीनगर एक्सटेंशन इंदौर, मप्र
संपर्क सूत्र	: 9893848984, 9407894965
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



सोमवंशी

सनम सिंह

जन्मतिथि	: 06/01/1998
जन्म स्थान	: सतना
जन्म समय	: 12.46 am
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 183 cm
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: अत्री
गोस्त्र (मामा)	: सेंगर
शिक्षा	: मास्टर अन बिजनेस
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 1,50,000 मासिक
पिता का नाम	: श्री दर्शन सिंह
वर्तमान पता	: किस्टल आइडियल सिटी फेस-2, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 7869436851
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



राजपूत समाज मेट्रोमोनी

सोलंकी

विक्रान्त सिंह सोलंकी

जन्मतिथि	: 05.08.1996
जन्म स्थान	: बैतूल
जन्म समय	: 9.30 am
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 5.11 फीट
वर्ण/ रंग	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: मारद्वज
गोस्त्र (मामा)	: गौतम
शिक्षा	: B.sc, B.pharma
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 35,000
पिता का नाम	: श्रीमती दीपा सिंह
वर्तमान पता	: चन्द्रशेखर वार्ड, बजरंग मंदिर के पिछे लिंक रोड, सदर बैतूल
संपर्क सूत्र	: 9407274120
पंजीन दिनांक	: (अप्रैल 2027 तक)



बैस

अभि सिंह बैस

जन्मतिथि	: 17/04/1993
जन्म स्थान	: बुरहानपुर
जन्म समय	: 4:15 am
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 5.7
वर्ण	: नहीं
गोस्त्र (स्वयं)	: मारद्वज
गोस्त्र (मामा)	: सोलंकी
शिक्षा	: MBA, LLB
व्यवसाय/नौकरी	: व्यवसाय
मासिक आय	: 50,000
पिता का नाम	: श्री लखन सिंह बैस
वर्तमान पता	: पिपल मोहल्ला, इटारसी जिला नर्मदापुर
संपर्क सूत्र	: 9179015123
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



परमार

रुद्रप्रताप सिंह

जन्मतिथि	: 04/06/1990
जन्म स्थान	: औबेदुल्लागंज
जन्म समय	: नहीं
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 5.9
वर्ण	: नहीं
गोस्त्र (स्वयं)	: वशिष्ठ
गोस्त्र (मामा)	: वत्स
शिक्षा	: 12वीं
व्यवसाय/नौकरी	: किसान
मासिक आय	: 30,000
पिता का नाम	: श्री बहादुर सिंह राजपूत
वर्तमान पता	: वार्ड-4 श्री टिकारा कॉलोनी मेन रोड, औबेदुल्लागंज
संपर्क सूत्र	: 8982968589
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



राठौर

बालबहादुर सिंह राठौर

जन्मतिथि	: 01/01/1987
जन्म स्थान	: नसिंगगढ़
जन्म समय	: 1:00
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 4.00 इंच
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: राठौर
गोस्त्र (मामा)	: खीची
शिक्षा	: 12th
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 12,000
पिता का नाम	: श्री हरसिंह राठौर
वर्तमान पता	: बारादरबारी नरसिंगगढ़
संपर्क सूत्र	: 9300253182
पंजीन दिनांक	: (मार्च 2026 तक)



कछवाह

अभिषेक सिंह

जन्मतिथि	: 04/10/1987
जन्म स्थान	: सुहागपुर
जन्म समय	: नहीं
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 5.4
वर्ण	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: गौतम
गोस्त्र (मामा)	: माटी
शिक्षा	: PG
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: नहीं
पिता का नाम	: श्री प्रकाश नारायण सिंह
वर्तमान पता	: ई-8 अरेरा कॉलोनी मोपाल
संपर्क सूत्र	: 9425402743
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



राठौर

प्रफुल्ल राठौर

जन्मतिथि	: 06/07/1997
जन्म स्थान	: मोपाल
जन्म समय	: 12.33 pm
मांगलिक	: है
ऊँचाई	: 173 cm
वर्ण	: गेहुआ
गोस्त्र (स्वयं)	: कश्यप
गोस्त्र (मामा)	: पलरिया
शिक्षा	: B.sc Hotel mgm
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: 40,000 मासिक
पिता का नाम	: श्री राजेंद्र राठौर
वर्तमान पता	: महेन्द्र टाउनशिप फेस-1 गुलमोहर एक्ट, मोपाल
संपर्क सूत्र	: 8819064521
पंजीन दिनांक	: (दिसंबर 2026 तक)



भांटी

वासुदेव भांटी

जन्मतिथि	: 13/06/1996
जन्म स्थान	: मोपाल
जन्म समय	: 10.10 am
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 6 फीट
वर्ण/ रंग	: गौरा
गोस्त्र (स्वयं)	: नहीं
गोस्त्र (मामा)	: नहीं
शिक्षा	: MBA
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
आय	: नहीं
पिता का नाम	: श्री मोहन भांटी
वर्तमान पता	: मोपाल मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र	: 9713841384
पंजीन दिनांक	: (अगस्त 2027 तक)



Reg. No. 2526/013

चेतन राज सिंह जादोन

जन्मतिथि	: 01-Jan-1991
जन्म स्थान	: बेगमगंज
जन्म समय	: 10:45 AM
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 180 से.मी.
गोस्त्र(स्वयं)	: गहरवार
गोस्त्र(मामा)	: दमक
पिता का नाम	: बच्चन सिंह जादोन
शिक्षा	: बी इ एंड टी सी आर.जी.पी.वी. भोपाल
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 104167
वर्तमान पता	: 131 कांता श्रवण ज्योति नियर सागर इंजीनियरिंग कॉलेज अयोध्या बाईपास रोड भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9179168231



Reg. No. 2526/017

सार्थक चौहान

जन्मतिथि	: 17-Feb-1998
जन्म स्थान	: सरगुजा
जन्म समय	: 02:45 PM
मांगलिक	: नहीं
ऊँचाई	: 180 से.मी.
गोस्त्र(स्वयं)	: वत्स
गोस्त्र(मामा)	: भरद्वाज
पिता का नाम	: श्री शिवराज सिंह चौहान
शिक्षा	: B. Com BBI PGDM finance
व्यवसाय/नौकरी	: नौकरी
मासिक आय	: 66667
वर्तमान पता	: फ्लैट नं. A-1/601, डी.के. ब्रिज टॉवर, नया पुरा, कोलार रोड, भोपाल
संपर्क सूत्र	: 9425254606



Reg. No. 2526/168

अमन सिंह जादौन



जन्मतिथि : 21-Aug-2000
जन्म स्थान : फरीदाबाद
जन्म समय : 04:20 PM
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 178 से.मी.
गोत्र(स्वयं) : बगौनिया
गोत्र(मामा) :
पिता का नाम : रवि सिंह
शिक्षा : BBA
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 100000
वर्तमान पता : डी ३२९, नई मीनल
संपर्क सूत्र : 9926821664

Reg. No. 2526/169

लक्ष्मन सिंह सिसोदिया



जन्मतिथि : 05-Mar-1993
जन्म स्थान : खाम्लय
जन्म समय : 12:55 PM
मांगलिक : नहीं
ऊँचाई : 170 से.मी.
गोत्र(स्वयं) : केलवा सिसोदिया
गोत्र(मामा) : उमठ
पिता का नाम : बाबू सिंह सिसोदिया
शिक्षा : 12th
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 15500
वर्तमान पता : खाम्लय
संपर्क सूत्र : 9174147804

Reg. No. 2526/170

गौरव तोमर



जन्मतिथि : 25-Dec-1995
जन्म स्थान : भोपाल
जन्म समय : 08:20 AM
मांगलिक : हाँ
ऊँचाई : 173 से.मी.
गोत्र(स्वयं) : निरंजन
गोत्र(मामा) : रजोड़िया
पिता का नाम : संतोष तोमर
शिक्षा : B.sc (Maths)
व्यवसाय/नौकरी : नौकरी
मासिक आय : 25000
वर्तमान पता : E-6 j-235 जनता कॉलोनी अरेरा
कॉलोनी भोपाल
संपर्क सूत्र : 8305117534

मासिक राजपूत दर्पण

(राजपूत समाज का मासिक मुख-पत्र)

संपादकीय कार्यालय: एम-2, 159 जोन-2, महाराणा प्रताप नगर भोपाल - 462011 (म.प्र.)

📞 नं.- 917 908 1582, Email-rajputdarpan.bpl@gmail.com

सदस्यता फार्म

मैं.....
निवासी.....पिन कोड नं..... 'मासिक राजपूत दर्पण'
सामाजिक पत्रिका का वार्षिक/पांच वर्षीय/दस वर्षीय/आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ। इस हेतु राशि
रुपए.....नगद/ड्राफ्ट/ जमा कर सदस्य बनाने का कष्ट करें।

राजपूत दर्पण का बचत खाता क्रमांक - 21710200000249, IFSC Code- BARBOKOTRAS बैंक ऑफ बड़ौदा, कोटरा सुल्तानाबाद शाखा, भोपाल

सदस्यता शुल्क

वार्षिक सदस्य - 400 रुपए
तीन वर्षीय सदस्य - 1100 रुपए
पांच वर्षीय सदस्य - 2000 रुपए
दस वर्षीय सदस्य - 4000 रुपए

नाम.....
पूर्ण पता.....
फोन/मो.....
दिनांक

स्मृति छात्रवृत्ति योजना द्वितीय हेतु ➤ आवेदन आमंत्रित है। ➤

मान्यवर,

राजपूत समाज के मेधावी व होनहार छात्र, छात्राओं जिन्होंने शैक्षणिक सत्र 2026 में **10वीं कक्षा में 85 प्रतिशत या अधिक अंक** प्राप्त किए हो एवं जो **आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS)** की श्रेणी में आते हो, ऐसे चयनित छात्र, छात्राओं को मध्य प्रदेश राजपूत समाज संस्था द्वारा **कक्षा 11वीं एवं कक्षा 12वीं** के लिए प्रति माह **1 हजार रुपये "स्मृति छात्रवृत्ति योजना"** के तहत छात्रवृत्ति हेतु आवेदन आमंत्रित हैं।

इस योजना हेतु आवश्यक दस्तावेज

- 1 आधार कार्ड,
- 2 समग्र आईडी,
- 3 10 कक्षा की मार्कशीट,
- 4 एवं अभिभावक का आधार कार्ड,
- 5 आय प्रमाण पत्र

उपरोक्त सभी दस्तावेजों की स्वहस्ताक्षरित फोटो कॉपी दिनांक 15 अक्टूबर तक जमा करें।



म.प्र. राजपूत समाज संस्था



कार्यालय: महाराणा प्रताप भवन, चार इमली,
मेन रोड नं. 3, भोपाल-462016 (म.प्र.)

हेमंत सिंह परिहार- 883 950 6270
राजेश कुशवाह- 982 744 7630
ऋतुराज सिंह परमार- 942 500 4866
कार्यालय- 917 908 1582



E-mail: mprajputsamaj1582@gmail.com



M.P.RajputSamaj1582Bhopal



Web - www.mprajputsamaj.org

जय क्षत्रिय धर्म

जय क्षत्रिय एकता

जय भवानी



म.प्र. राजपूत समाज

पंजीयन क्रमांक 1582/1969



विजयादशमी पर्व - 2026: सामाजिक प्रतिभा सम्मान

॥ साथियों नमस्कार ॥

**विजयादशमी पर्व पर शस्त्र पूजन एवं
सामाजिक प्रतिभा सम्मान-2026 हेतु निवेदन**



मंगलवार, 20 अक्टूबर 2026, विजयादशमी, प्रातः 10:30 बजे



स्थान: महाराणा प्रताप भवन, चार इमली, मेन रोड नं.-3, भोपाल



॥ प्रतिभा आमंत्रण ॥



* सामाजिक * शैक्षणिक (10वीं/12वीं में 95% से अधिक)

* धार्मिक * राजनैतिक * प्रशासनिक * व्यावसायिक

* आर्थिक * कला साहित्यिक * खेलकूद * पत्रकारिता * गायन

* शासकीय/अशासकीय सेवा * या अन्य कोई क्षेत्र में।

वर्ष 2026 में जिला, संभाग, राज्य अथवा राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय
सफलता प्राप्त करने वाले प्रतिभावान व्यक्तियों का सम्मान।



**अंतिम तिथि: प्रमाण पत्र (छायाप्रति) एवं पूर्ण जानकारी
जमा करने की अंतिम तिथि - गुरुवार, 15 अक्टूबर 2026**

1. महाराणा प्रताप भवन कार्यालय में जमा करें।

2. ई-मेल: mprajputsamaj1582@gmail.com पर मेल करें।



॥ सप्रेम जय क्षत्रिय धर्म, जय क्षत्रिय एकता, जय भवानी ॥



निवेदक: म.प्र. राजपूत समाज संस्था, भोपाल, 917 908 1582 | Website: www.mprajputsamaj.org

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक दीपक चौहान द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, म.नं. 119, इनारा हाऊस, पुल बोगदा, रायसेन रोड भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं 'मैनपुरी हाऊस' ए-519 सर्वधर्म बी-सेक्टर कोलार रोड-भोपाल-462042 (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक-दीपक चौहान।